आर.एन.आई. नं. DELHIN/2017/73538

सेवा पाती

मूल्य » ₹ 5 ● वर्ष-02 ● अंक » 25 ● मुद्रण तारीख » 1 मई-2019 ● कुल पृष्ठ » 28

परम पू. कैलाश जी 'मानव'

चैत्र नवरात्रि में 301 दिव्यांग कन्याओं का पूजन

आपश्री के सहयोग से सम्पन्न हुए इन कन्याओं के ऑपरेशन...

नारायण महावीर प्राकृतिक चिकित्सालय

प्रकृति ही हमारी सच्ची स्वास्थ्य रक्षक है

राजस्थान का कश्मीर कही जाने वाली झीलों की नगरी उदयपुर से 15 कि.मी दूर अरावली पर्वतमाला की सुरम्य वादियों के आंचल में लियों का गुड़ा गांव स्थित नारायण सेवा संस्थान के सेवा महातीर्थ परिसर में नारायण महावीर प्राकृतिक चिकित्सालय असाध्य रोगों से ग्रस्त उन महानुभावों को आरोग्य प्रदान कर रहा है जो अन्य चिकित्सा पद्धतियों से निराश हो चुके थे तथा इन रोगों को अपनी नियती मानकर अभिशप्त जीवन जी रहे थे। ऐसे ही निराश महानुभावों को संस्थान में पधार कर स्वास्थ लाभ लेने का सादर आमंत्रण है।

- पूर्णतः प्राकृतिक वातावरण में प्राकृतिक चिकित्सा विधि से नाना प्रकार के रोगों का इलाज।
- चिकित्सालय में भर्ती होने वाले रोगियों की दिनचर्या प्राकृतिक चिकित्सक के निर्देशानुसार निर्धारित होती है।
- रोगियों को उनकी स्वास्थ्य समस्याओं के अनुसार आहार चिकित्सा दी जाएगी।
- आवास एवं भोजन की सुव्यवस्था।

नेचुरोपैथी के साथ योगा थेरेपी एवं एडवांस एक्यूपंक्चर थेरेपी भी उपलब्ध है। सम्पर्क करें:- 0294 6622222, 09649499999

/nssudaipur /narayansevasansthan /@narayanseva_ narayansevasansthan

नारायण सेवा संस्थान
नर सेवा नारायण सेवा

सेवा पाती
1 मई, 2019

वर्ष 02 अंक 25 मूल्य ₹ 05

कुल पृष्ठ » 28

संपादक मंडल

मार्ग दर्शक » कैलाश चन्द्र अग्रवाल
सम्पादक » प्रशान्त अग्रवाल
डिजाइनर » विरेन्द्र सिंह राठौड़

संपर्क (कार्यालय)

नारायण सेवा संस्थान
नर सेवा नारायण सेवा

नारायण सेवा संस्थान

सेवा-पाती (मासिक पत्रिका)

मुद्रण तारीख 1 मई, 2019 स्वत्वाधिकार नारायण सेवा संस्थान, प्रकाशक जतन सिंह द्वारा 6473, कटरा बरियान, फतेहपुरी, दिल्ली-110006 से प्रकाशित तथा एम.पी. प्रिंटर्स नोएडा से मुद्रित।

Web » www.narayanseva.org
E-mail » info@narayanseva.org

हिरण मगरी, सेक्टर-4 उदयपुर (राज.)-313002, फोन नं. : 0294-6622222, मो नं. : 09649499999

CONTENTS

इस माह में

पाठकों हेतु

जीवन संध्या वृद्धावस्था में अकेलेपन से बचें 05

अन्य स्तंभ

- अपनों से अपनी बात 04
- सास-बहू में सामंजस्य जरूरी 06
- रविंद्रनाथ ठाकुर 07
- बच्चों को बनाएं आत्मविश्वासी 08
- रूमादेवी आत्मनिर्भरता की... 09

उड़ान दिव्यांग की प्रस्तुतियों ने मन मोहा 10

- नरेन्द्र को मिला नव-जीवन 11
- दिव्यांग को दी निःशुल्क स्कूटी 12
- 301 दिव्यांग कन्याओं का पूजन 13
- रामामंडी में कृत्रिम अंग वितरण 14
- सेवा मनीषियों का स्नेह सम्मेलन 15
- सेवा और सम्मान 16

कथा ज्ञान यज्ञ परिवार की नींव प्रेम-जया किशोरी जी 17

- प्रभु प्राप्ति हो वही साधना श्रेष्ठ 18
- झीनी-झीनी रोशनी (6) 19
- दानवीर भामाशाहों का आभार 20
- दान सहयोग हेतु अपील 21
- शिविर सहयोग 22
- भोजन-नाश्ता सहयोग 23

अपनों से अपनी बात

पू. कैलाश 'मानव'

अवसर बहुतेरे

क्या हुआ यदि हमने एक अवसर गवां दिया। दुनिया में अवसरों की कमी थोड़े ही है। यदि चारों ओर देखा जाये तो अवसर ही अवसर दिखाई देंगे।

किसी गांव में एक कुम्हार बहुत अच्छे और सुन्दर मिट्टी के बर्तन बनाता था। उसने चार सुन्दर घड़े बनाये। बावजूद इसके अन्य बर्तन तो बिक रहे थे लेकिन उनका खरीददार नहीं आ रहा था।इस बात से चारों बहुत दुखी थे। एक दिन चारों आपस में बात करने लगे। पहला बोला, 'मैं एक बड़ी और सुन्दर मूर्ति बनना चाहता था ताकि किसी अमीर के घर की शोभा बनता। तभी दूसरा बोला, मैं एक दीया बनना चाहता था ताकि रोज जलता और चारों ओर रोशनी बिखेरता। तभी तीसरे घड़े ने कहा, 'किस्मत तो मेरी भी ख़राब है। मैं एक गुल्लक बनना चाहता था। लोग मुझे हमेशा पैसों से भरा रखते। अपनी बात खत्म होने पर चौथा घड़ा मुस्कुराया और बोला, 'आप तीनों क्या समझते हो, क्या मैं दुखी नहीं हूँ? दोस्तों! मैं तो एक खिलौना बनना चाहता था ताकि बच्चे मुझसे खेलते और बहुत खुश होते। लेकिन कोई बात नहीं। हम एक उद्देश्य में असफल हो गए तो क्या। दुनिया में अवसरों की कमी नहीं है। आगे और भी मिलेंगे। बस धैर्य रखो और इंतजार करो। एक महीना बीता ही था कि ग्रीष्म ऋतु आ गई। ठंडे पानी की जरुरत के लिए लोगों ने घड़े खरीदने शुरू कर दिए।चारों घड़े बड़े और सुन्दर तो थे ही लोगों ने ऊँचे दामों पर उन्हें खरीद लिया। आज वे लोगों की प्यास बुझाते हैं और बदले में खुशी और दुआएं पाते हैं। दुनिया में बहुत से ऐसे लोग हैं जो वह नहीं बन पाते जो वे बनना चाहते हैं। ऐसा होने पर लोग खुद को असफल महसूस करते हैं और हमेशा अपनी किस्मत को दोष देते रहते हैं। मित्रों! क्या हुआ यदि हमने एक अवसर गवां दिया। दुनिया में अवसरों की कमी थोड़े ही है। यदि चारों ओर देखा जाये तो अवसर ही अवसर दिखाई देंगे। कोई एक अवसर आपको सफलता जरूर दिला देगा। हमेशा धैर्य बनाये रखें।

प्रेरक प्रसंग

'सेवक' प्रशान्त भैया

सबसे अमूल्य वस्तु

अमूल्य वस्तुएं इंसान को क्षण भर सुख प्रदान कर सकती हैं। लेकिन जिसके पास संतोष का धन है, वही इंसान जिंदगी में सच्चे सुख की अनुभूति कर पाता है।

एक राजा ने प्रजा के सेवा कार्यों को बढ़ाने के लिए कर्मठ व बुद्धिमान व्यक्ति की नियुक्ति का निश्चय किया। इसके लिए उन्होंने प्रतियोगिता आयोजित की। दूर-दूर से बड़ी तादाद में लोग आए। राजा ने एक बड़े मैदान में बहुत सारी कीमती वस्तुएं रखवाई। राजा ने घोषणा की कि जो भी व्यक्ति इनमें से सबसे कीमती वस्तु उनके पास लेकर आएगा उसे ही नियुक्ति दी जाएगी। प्रतियोगिता आरम्भ हुई। सभी प्रतियोगी सबसे अमूल्य वस्तु तलाशने में लग गए। कई हीरे-जवाहरात लेकर तो कई सोने-चांदी की चीजें, कुछ लोग पुस्तकें, तो कोई भगवान की मूर्ति और एक गरीब व्यक्ति रोटी लेकर राजा के सामने उपस्थित हुआ। तभी एक नौजवान राजा के सामने खाली हाथ आ खड़ा हुआ। राजा ने सबसे प्रश्न करने के उपरान्त उस नौजवान से प्रश्न किया- अरे! नौजवान, क्या तुम्हें कोई भी वस्तु अमूल्य नजर नहीं आई? तुम खाली हाथ कैसे आये?'राजन! मैं खाली हाथ कहाँ आया हूँ, मैं तो सबसे अमूल्य वस्तु लाया हूँ।' 'नौजवान बोला। 'ऐसा क्या लाये हो?'- राजा ने पूछा।'मैं संतोष लेकर आया हूँ महाराज!'- नौजवान ने कहा।क्या, 'संतोष', इन लोगों द्वारा लायी गई वस्तुओं से भी मूल्यवान है?- राजा ने पुनः प्रश्न किया। जी हाँ राजन! अमूल्य वस्तुएं इंसान को क्षण भर के लिए सुख प्रदान कर सकती हैं। इनकी प्राप्ति के बाद मनुष्य कुछ और ज्यादा पाने की इच्छा करने लगता है। लेकिन जिसके पास संतोष का धन है, वही इंसान जिंदगी में सच्चे सुख की अनुभूति और अपनी सभी भौतिक इच्छाओं पर नियंत्रण कर सकेगा।' नौजवान ने शांत स्वर में उत्तर दिया। नौजवान को राजा ने सम्मानजनक ओहदे पर चुन लिया और सम्मानित भी किया।

जीवन संध्या

वृद्धावस्था में अकेलेपन से बचें

रिटायर होते ही व्यक्ति को लगता है जैसे सब कुछ थम गया, सब कुछ ठहर सा गया हो पर ऐसा नहीं है। वृद्धावस्था भी उम्र के अन्य दौरों की तरह एक दौर है जिसका सामना हर व्यक्ति को करना पड़ता है। कुछ व्यक्ति वृद्धावस्था को भी उम्र के अन्य चरणों की तरह एंजाय करते हैं पर कुछ से बोझ मानते हुए अपने अकेलेपन में घुटते रहते हैं।

उम्र बढ़ने का अर्थ खालीपन व बेकार होना नहीं बल्कि कुछ ऐसा करने का समय है जब आप जिम्मेदारी से मुक्त हैं और आपके पास समय की कोई कमी नहीं। आपके मन में जो चाहे आए, आप कर सकते हैं। आइए उम्र के इस दौर को खालीपन से बचाने के लिए आप क्या कर सकते हैं। इसे जानें।

- पहले तो आपके पास सामाजिक गतिविधियों के लिए समय नहीं था पर अब आप अपने दोस्तों की संख्या को बढ़ाएं। किसी सामाजिक संस्था के सदस्य बनकर सेवा कार्य करें।
- रिटायर होने के पश्चात् भी आप कोई पार्ट टाइम जॉब कर सकते हैं। ट्यूशन, एकाउंटस आदि पार्ट टाइम जॉब करके आप व्यस्त भी रहेंगे और आपकी आमदनी का जरिया भी बना रहेगा।
- आप के पास हाथ का हुनर है तो आप स्वयं का लघु व्यवसाय प्रारंभ कर सकते हैं।
- घर के कामों में मदद करें। बच्चों को स्कूल छोड़ना, बैंक के कार्य, जो भी कार्य आपको सुविधाजनक लगे, उन्हें करके अपने को व्यस्त रखने की कोशिश करें।
- वृद्धावस्था तक पहुंचते-पहुंचते आपके बच्चे जवान हो चुके होते हैं और उनकी अपनी जिम्मेदारियां होती हैं। आज की व्यस्तता भरी जिंदगी में जहां अपने लिए भी समय निकालना मुश्किल होता है वहां उनसे अधिक आशा रख कर न चलें कि वह आपके टाइम पास के लिए समय निकाल पाएंगे। अगर आप उनसे कम आशा रखेंगे तो स्वयं भी खुश रहेंगे और आपके परिवार वाले भी खुश रहेंगे।
- जब व्यक्ति खाली होता है तो वह दूसरे कामों में अधिक टोका-टाकी करता है। अक्सर परिवारों में यह लड़ाई की वजह देखी गई है। इसलिए परिवार में दखलअंदाजी कम करें और हर किसी को अपने अनुसार चलाने का प्रयत्न न करें।
- नए रचात्मक शौक अपनाएं या अपने पुराने शौकों को फिर से जगाएं। संगीत सुनना, बागवानी करना, पत्रिकाएं पढ़ना, टी.वी. देखना जो भी अच्छा लगे, करें।
- अगर आप धार्मिक हैं तो नियमित मन्दिर जाने का नियम बनाएं।

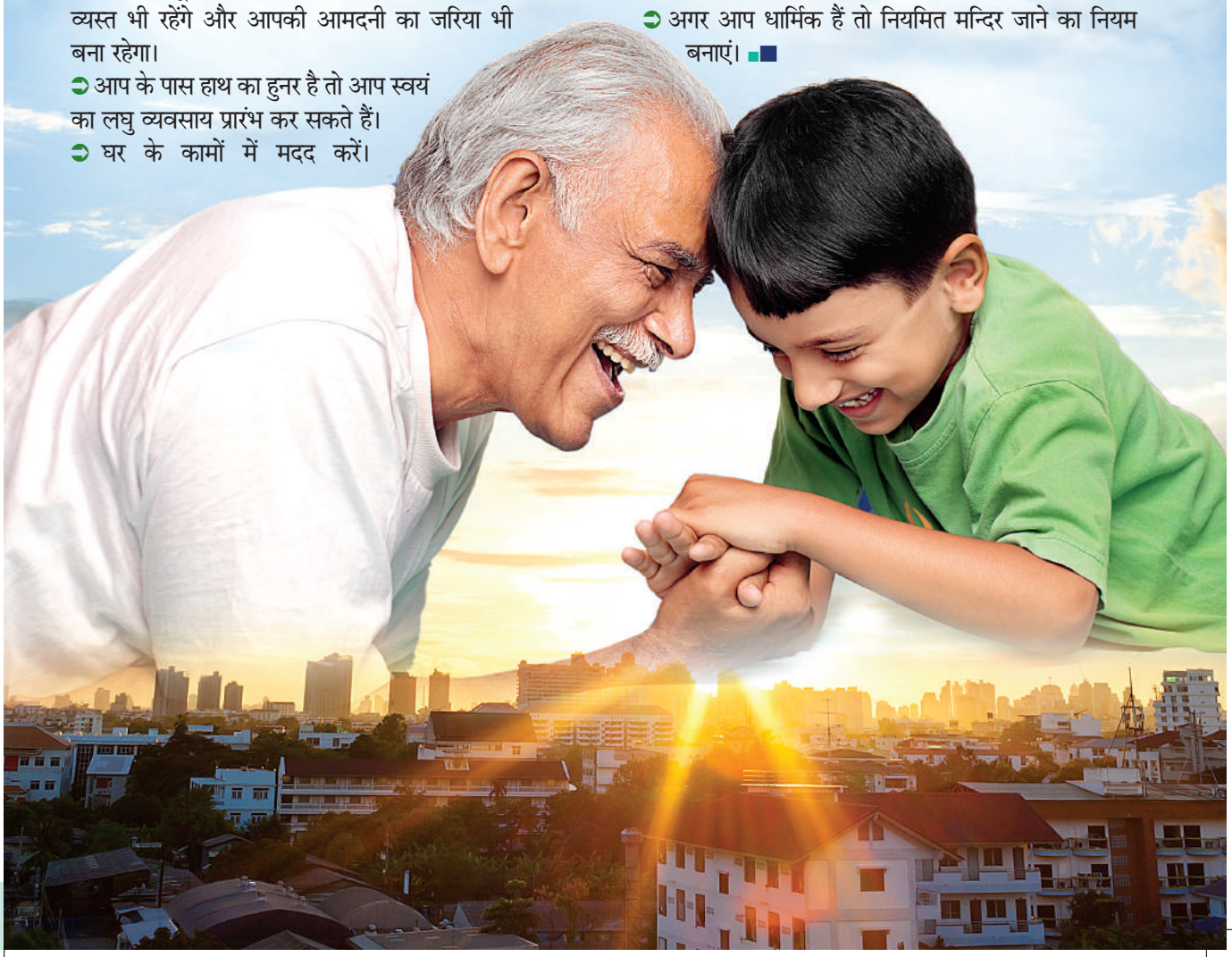

महिला मंगल

सास-बहू में सामंजस्य जरूरी

सास-बहू में अनबन का किस्सा आम बात है। नई-नवेली दुल्हन कितने अरमान लेकर ससुराल में बहू बनकर आती है लेकिन जब आपसी तालमेल के अभाव में सास-बहू के बीच खटपट शुरू हो जाती है तो घर में अशांति और कलह का वातावरण पैदा हो जाता है जिससे परिवार पर बुरा असर पड़ता है। बहू की शिकायत होती है कि सास मुझे समझने की कोशिश ही नहीं करती और सास कहती है कि बहू को मेरी फिक्र ही नहीं। वह अपनी मनमानी करती है। बहू को यह सोचना चाहिए कि ससुराल ही अब उसका अपना घर है। इस घर की सुख-शांति, दुख-दर्द, मान-अपमान, सब उसके अपने हैं अगर वह ससुराल के तौर-तरीके सीखे और उन्हें अपनाने की कोशिश करे तो शुरू-शुरू में कुछ असुविधा जरूर हो सकती है और कुछ बातें अजीब भी लग सकती हैं, लेकिन धैर्य और सहनशक्ति का दामन थामकर उस माहौल में ढलने की कोशिश करती रहें अगर आप सास को प्यार देंगी, तो बदले में उनका प्यार भी पाएंगी। चूंकि सास बुजुर्ग और अनुभवी होती है, इसलिए जहां तक संभव हो, उन्हें धैर्य, संतोष और सहनशीलता से काम लेना चाहिए। बहू से बहस में पड़ने की बजाय उन्हें शांत हो जाना चाहिए। इसी में उनकी गरिमा भी है। सास का व्यवहार उदार व मृदु रहेगा तो बहू का रवैया भी मधुर होगा। बहू को भी चाहिए कि वह बात का बतंगड़ न बनाए और शांति से काम ले, सहनशक्ति और धैर्य बनाए रखे। कभी किसी बात के लिए जिद लेकर न बैठ जाएं। कई बार बोलने से अधिक चुप रहना श्रेष्ठ होता है। आप सास हैं तो बहू को बात-बात में यह न जताएं कि आप घर की मालकिन हैं और इस पर आपका ही राज चलेगा बल्कि यह कहें कि बहू, इस घर पर तुम्हारा भी उतना ही अधिकार है। तुम भी इस घर की जिम्मेदार सदस्य हो, अपने हिसाब से इस घर को सजाओ-सवारों। बहू पर अपनी बातों को थोपने की कोशिश न करें। कोई मशविरा देना हो तो ऐसे दें कि बहू को बुरा न लगे। इससे बहू के दिल में आपके प्रति मान बढ़ेगा। अगर बहू थकी-मांदी घर आए तो उसे थोड़ा आराम करने दें। यह न सोचें कि आते ही वह काम में जुट जाएगी। बहू के अच्छे काम और अच्छे भोजन की प्रशंसा अवश्य करें। अगर कोई काम हो या किसी चीज की जरूरत हो तो बेटे के बजाय सीधा बहू से संपर्क करें। इससे बहू को आंतरिक प्रसन्नता होगी और उसे महसूस होगा कि वह भी इस घर की महत्वपूर्ण सदस्य है। बहू को भी ममता की छांव दीजिए तो कभी सहेली सदृश व्यवहार करें। अगर सास-बहू को बेटी की तरह समझेगी तो बहू भी सास में अपनी मां की छवि देखेगी और मान देगी। अगर कभी आपस में अनबन हो भी जाए तो आपा न खोएं। गुस्से में अपशब्द न बोलें। पीठ पीछे या दूसरों के सामने एक-दूसरे की शिकायत न करें और न ही अपने मनमुटाव या झगड़े को घर से बाहर जाने दें। सास-बहू कभी भी एक-दूसरे को प्रतिद्वंद्वी ने समझें और न ही खुद को श्रेष्ठ साबित करने में लगी रहें। छोटी-छोटी बातों को दिल से न लगाएं। अपनी गलतियों को स्वीकारें और जल्द से जल्द एक-दूसरे की नाराजगी को खत्म कर दें। सास-बहू अगर एक-दूसरे को समझने और आपस में तालमेल बिठाकर रखें तो यह रिश्ता मां-बेटी से भी ज्यादा मधुर हो जाएगा। यह रिश्ता अनुराग, ममता, मनुहार और सम्मान भरा होगा तो आपस में तनातनी की समस्या ही नहीं रहेगी।

महामना

रविंद्रनाथ ठाकुर

जन्मः 7 मई, 1861
निधनः 7 अगस्त, 1941

पश्चिम बंगाल के जोड़ासांको में जन्मे रवींद्रनाथ ठाकुर पहले भारतीय थे, जिन्हें 'गीतांजलि' के लिए नोबेल पुरस्कार मिला। उनके लेखन में इतनी ताकत थी कि अंग्रेजी सत्ता भी उनकी कलम से घबराती थी। भारत और बांग्लादेश के राष्ट्रगान के रूप में रवींद्रनाथ ठाकुर का लिखा गीत गाया जाता है। प्रकृति से प्रेम करने वाले ठाकुर भारतीय संस्कृति के प्रतीक थे। उन्हें दुनिया गुरूदेव के नाम से भी जानती है।

व्यक्तिगत जीवनः- रवींद्रनाथ ठाकुर के पिता देवेंद्रनाथ ठाकुर और माता शारदा देवी थीं। उनके पिता दार्शनिक और ब्रह्म समाज के संस्थापकों में से एक थे। बचपन में ही ठाकुर के सिर से मां का साया उठ गया। उनके सबसे बड़े भाई द्विजेंद्रनाथ एक दार्शनिक और कवि थे और दूसरे भाई सत्येंद्रनाथ यूरोपीय सिविल सेवा के लिए पहले भारतीय नियुक्त व्यक्ति थे। उनके एक भाई ज्योतिंद्रनाथ संगीतकार और नाटककार थे और उनकी बहन स्वर्ण कुमारी उपन्यासकार थीं।

शिक्षा-दीक्षाः- रवींद्रनाथ ठाकुर की शुरूआती शिक्षा सेंट जेवियर स्कूल में हुई। 1883 में मृणालिनी देवी के साथ उनका विवाह हुआ। भाई ज्योतिंद्रनाथ की पत्नी कांदबरी देवी की मृत्यु से ठाकुर बहुत आहत हुए और विद्यालयी शिक्षा से उनका मन उठने लगा। अब वे परिवार के साथ अधिक समय गुजारने लगे। ठाकुर ने कला, शरीर विज्ञान, भूगोल, इतिहास, साहित्य, गणित, संस्कृत और अंग्रेजी जैसे विषयों को अपना पसंदीदा विषय बनाया और उनका अध्ययन किया। शिक्षा को लेकर ठाकुर का कहना था कि उचित शिक्षण चीजों की व्याख्या नहीं करता, उनके अनुसार उचित शिक्षण जिज्ञासा पैदा करता है।

साहित्यिक रूचि :- रवींद्रनाथ ठाकुर को बचपन से ही कविताएं लिखने का शौक था। उन्होंने पहली कविता आठ साल की उम्र में लिखी। सोलह साल की उम्र में उनकी लघुकथा प्रकाशित हुई। ठाकुर ने गीतांजलि, नैवेद्य, मेयेर खेला, चोखेर बाली, पूरबी प्रवाहिनी, शिशु भोलानाथ, महुआ, वनवाणी, परिशेष, पुनश्च, वीथिका शेषलेखा, कणिका और क्षणिका आदि रचनाएं लिखीं। उन्होंने साहित्य की हर विधा में लिखा। उनका लेखन केवल बांग्ला तक सीमित नहीं रहा, बल्कि हिंदी, अंग्रेजी आदि में अनुवादों के जरिए पूरे विश्व मे पहुंचा। उन्हें विश्व भर में ख्याति प्राप्त हुई।

प्रकृति प्रेमीः- ठाकुर को बचपन से ही प्रकृति से इतना प्रेम था कि 1907 में सियालदह छोड़ कर आश्रम की स्थापना करने के लिए शांतिनिकेतन आ गए। उनका मानना था कि विद्यार्थियों को प्रकृति के सानिध्य में रह कर अध्ययन करना चाहिए। प्रकृति के बीच में पेड़ों, बगीचों और एक पुस्तकालय के साथ ठाकुर ने शांतिनिकेतन की स्थापना की। गीतांजलि के संकलन में भी उनके कई गीत प्रकृति प्रेम को दर्शाते हैं। उन्होंने करीब 2200 गीतों की रचना की। आज उनके गीत बांग्ला संस्कृति का अभिन्न अंग हैं। उनके संगीत को रवींद्र संगीत के नाम से जाना जाता है।

ठाकुर और बापूः- ठाकुर और महात्मा गांधी के बीच कुछ बातों को लेकर वैचारिक मतभेद रहा। गांधी राष्ट्रवाद को पहले पायदान पर रखते थे, तो ठाकुर मानवता को राष्ट्रवाद से अधिक महत्व देते थे। पर दोनों एक-दूसरे का बहुत सम्मान करते थे। ठाकुर ने ही गांधी को 'महात्मा' कहा था। जब शांतिनिकेतन आर्थिक तंगी ये जूझ रहा था और ठाकुर देश भर में नाटकों का मंचन करके धन संग्रह कर रहे थे, उस समय गांधी जी ने ठाकुर को साठ हजार रूपए का अनुदान दिया था।

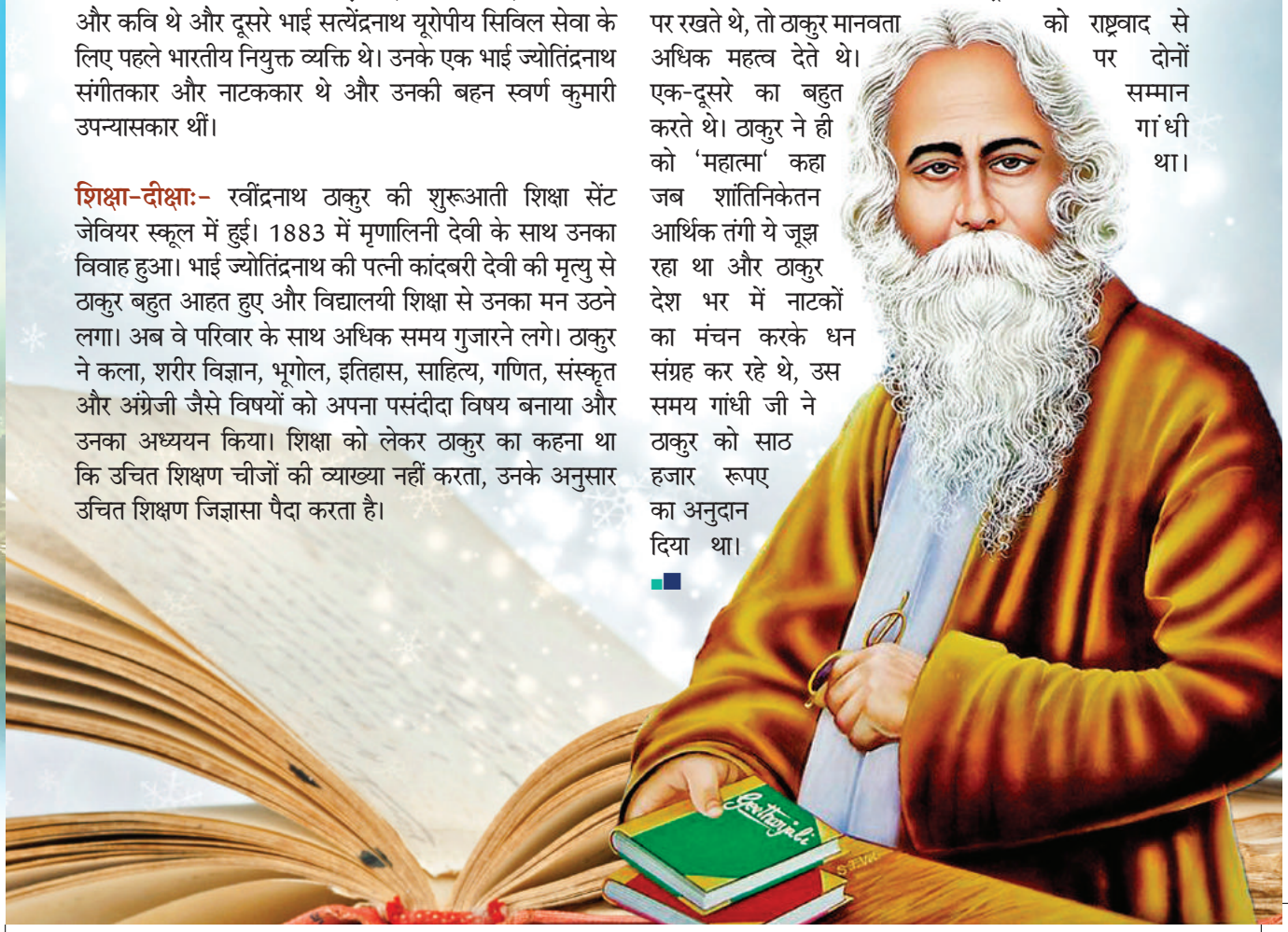

परवरिश

बच्चों को बनाएं आत्मविश्वासी

बच्चों को आत्मविश्वासी और पूर्ण बनाने के लिए मनोवैज्ञानिकों का मत है कि उनसे ईमानदारी भरा व्यवहार किया जाए व जीवन की सच्चाई कभी छिपाई न जाए।

बड़ों के पास तमाम साधन, उपाय रहते हैं कि वे बच्चों के मन, दुविधा, समस्या या किसी उलझन को समझ लें, पर बड़े ये नहीं समझ पाते कि कितनी ही बार उनकी चुप्पी, कोई दूसरा व्यवहार बच्चों को परेशान कर सकता है। अधिकांश मां-बाप बच्चों के प्रति अतिशय प्रेम, ममत्व व सुरक्षा के गहन भाव के कारण ही अपने तनावों, दुखों व उलझनों से दूर रखना चाहते हैं। वे अपने बच्चों को दुःख भरी सूचनाओं व जीवन के कड़वे हादसों की छाया भी नहीं पड़ने देना चाहते पर वे भूल जाते हैं कि ऐसा सुरक्षित व्यवहार करके भी कोई भी मां-बाप अपने बच्चों को जीवन की वास्तविकताओं से बचाए नहीं रख सकते। इस तरह के किसी भी सुरक्षित व बचाव भरे उपाय का प्रायः बच्चों पर उल्टा ही असर पड़ता है। वे यह तो भांप लेते हैं कि कुछ असामान्य है, पर क्या असामान्य है, इतना उन्हें ठीक-ठीक पता नहीं चल पाता फलतः वे ज्यादा भ्रमित डरे-डरे व आंतकित हो जाते हैं, न तो खुलकर पूछ ही पाते हैं न ही जान पाते हैं तथा किसी भी ऐसी स्थिति के लिए जाने अनजाने खुद को ही दोषी मान बैठते हैं।

यह ठीक है कि घरेलू मामलों या दाम्पत्य में पति-पत्नी के बीच हुई किसी भी मामले की झिक-झिक का खुलासा बच्चों के सामने करना ठीक नहीं, पर बच्चों के लिए समस्या का कपोल कल्पित आंकलन करने की अपेक्षा वास्तविकता की कठोरता से दो-चार होना अधिक ठीक हैं। यदि मां-बाप चाहते हैं कि उनके बच्चे अपना भला-बुरा समझें व आत्मविश्वास के साथ बड़े हों तो उन्हें ये सच्चाई समय-समय पर जरूर बता देनी चाहिए कि बड़ों की जिन्दगी में तमाम छोटी बड़ी समस्याएं-उलझनें रहती हैं, जिनका बच्चों से काई लेना देना नहीं रहता। जरूरी हो तो बच्चों को जितनी जानकारी उनके लायक हो, उन्हें दी जा सकती है व उन्हें पूर्णतः आश्वस्त भी किया जा सकता है कि उन्हें घबराने या भयभीत होने की कोई जरूरत नहीं है।

बच्चे अपने मां-बाप के प्रति निश्छल भाव से समर्पित होते हैं, इसी कारण वे जिस स्थिति को जान-समझ लेते हैं उसका सहजता से सामना भी कर लेते हैं जैसे वे समझ लेते हैं कि मां के सिर में तकलीफ है और वह सोना चाहती है तो वे शोर नहीं करते तथा टी.वी. आदि भी बन्द कर देते हैं। बच्चों के साथ ईमानदारी का व्यवहार करने पर मां-बाप स्वतः ही अपने व्यवहार तथा आचरण से उन्हें भी अपने प्रति ईमानदारी बरतने को प्रोत्साहित करते हैं। बच्चों को इतनी छूट व इजाजत होनी जरूरी है कि बड़ों के किसी व्यवहार से उन्हें उलझन या परेशानी हो तो वे स्पष्ट पूछ सकें।

जब बच्चों को यह भरोसा होगा कि वे अपनी कोई भी समस्या उलझन या भ्रम का जवाब मां-बाप से पा सकते हैं तभी वे जीवन की सच्चाईयों व वास्तविकताओं से दो चार होने लायक बनते हैं और अपना आत्मविश्वास, मनोबल को भी दृढ़ रख पाते हैं।

नारी शक्ति

रूमादेवी: आत्मनिर्भरता की मिसाल

परम्परागत आदिवासी हाथ करघे के जरिये राजस्थान के थार क्षेत्र के 75 गांवों की 22 हजार से अधिक महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने वाली रूमा देवी की अथक मेहनत व लगन से हाथ करघा उत्पाद ब्रिटेन व जर्मनी के कई शहरों में रैंप तक पहुंच कर भारत के हस्तशिल्प का डंका बजा रहा है।

बाड़मेर, राजस्थान के रेगिस्तानी इलाके के एक गरीब परिवार में जन्म लेने वाली रूमादेवी ने 2008 में बैग और कुशन बनाने का काम शुरू किया था। लेकिन परिधान के मुकाबले इनकी बिक्री बहुत कम होती थी। जिससे इनकी आर्थिक स्थिति में कोई विशेष सुधार नहीं हुआ। ये चाहती थी कि उनकी और उनकी जैसी ही क्षेत्र की अन्य महिलाओं की माली हालत में सुधार हो और वो कुछ ऐसा करें जो मिसाल भी बन सके। अतः उन्होंने सूती दुपट्टे और कुर्ते बनाने का काम शुरू किया। इसके बाद सिल्क की ओर रूख किया और टसर, मूंगा मटका सिल्क में साड़ी बनाना शुरू किया। सिल्क की साड़ियों को लोगों ने हाथोंहाथ लिया और आज बॉलीवुड कलाकारों सहित जाने-माने लोग इनकी पारंपरिक डिजाइन वाली सिल्क साड़ियों को बहुत चाव से खरीदते हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को भी उनके बाड़मेर आगमन पर रूमा देवी द्वारा डिजाइन किया गया एक शाल भेंट किया गया था, जिसे प्रधानमंत्री ने बहुत सराहा। रूमा देवी ने विख्यात डिजाइनर अनिता डोंगरे, बीवरी रसैल और अब्राहम ठाकुर के साथ भी काम किया है। उनके उत्पादों को लंदन फैशन वीक और कोलंबो फैशन वीक में भी प्रदर्शित किया जा चुका है।

रूमा देवी ने जर्मनी में टेक्सटाइल के सबसे बड़े मेले के अलावा कोलंबो, सिंगापुर, थाईलैंड और मलेशिया में भी प्रदर्शनी लगाकर बाड़मेर की कला को प्रदर्शित किया है। वे कहती हैं, विदेशियों को हमारा हस्तशिप बहुत पसंद आया। विदेशों में प्रदर्शनी लगाने से देश में भी बाड़मेर के कलाकारों द्वारा बनाए गए उत्पाद की ब्रिकी में इजाफा हुआ। राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद ने मार्च 2019 में 'नारी शक्ति' सम्मान से इन्हें अलंकृत किया। इसके अलावा भारतीय हस्तशिल्प के क्षेत्र में उल्लेखनीय सेवाओं के लिए सम्मानित किया जा चुका है। विश्व स्तर पर हस्तकला के प्रचार प्रसार के लिए उन्हें राज्य स्तरीय सम्मान से भी नवाजा जा चुका है। बाड़मेर के रेतीले धोरों से निकल कर विश्व स्तरीय डिजाइनरों के बीच फैशन शो के रैंप पर पहुंचने वाली रूमा के लिए यह सफर आसान नहीं था। 17 वर्ष की उम्र में उनकी शादी होने के कारण, उनकी स्कूली पढ़ाई पूरी नहीं हो पाई, लेकिन उन्होंने अपनी सोच, लगन और उत्साह से अपने को ही नहीं बल्कि आसपास के कई गांवों की अपने जैसे ही साधारण परिवार की महिलाओं के सपनों को पंख दिए।

उड़ान

दिव्यांगों की प्रस्तुतियों ने मन मोहा

-जींद के डीएवी स्कूल में दिव्यांग टैलेंट शो

जो व्यक्ति अपने लिए ना जी कर दूसरों के लिए जीए और सदा दूसरों की भलाई करे वही सच्चा इंसान है। यह उद्गार हरियाणा के मुख्यमंत्री के सचिव श्री राजेश गोयल ने 31 मार्च को जींद के डीएवी स्कूल में आयोजित दिव्यांग टैलेंट शो में बतौर मुख्य अतिथि कहे। उन्होंने कहा कि जो व्यक्ति अपने पैर पर खड़ा नहीं हो सकता और जो अपने हाथ से काम नही कर सकता उसे सक्षम बनाने और अपने पैरों पर खड़ा करने का जो काम नारायण सेवा संस्थान कर रहा है वह सेवा की बहुत बड़ी मिसाल है। डॉ.धर्मदेव विद्यार्थी के सौजन्य से जींद के लोगों को संस्थान की सेवाएं देखने को मिल रही हैं। दिव्यांग बहनों और भाइयों ने टैलेंट शो में जो प्रस्तुति दी है वह अंतरराष्ट्रीय स्तर की है। जींद में इस प्रकार का प्रयास अनोखा और अद्भुत है। जिसके लिए विवेकानंद फाउंडेशन जींद, आर्य युवा समाज हरियाणा तथा नारायण सेवा संस्थान बधाई के पात्र हैं। इस अवसर पर अतिथियों का स्वागत करते हुए नारायण सेवा संस्थान के अध्यक्ष सेवक प्रशांत भैया ने संस्थान की स्थापना से लेकर अब तक की निःशुल्क सेवा यात्रा की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि दिव्यांगों के अलावा भी गरीब परिवारों के लोगों में अन्य जटिलतम बीमारियों का इलाज भी संस्थान निःशुल्क करवाता है। उन्होंने घोषणा की कि संस्थान की शाखा जींद में भी शीघ्र खोली जाएगी और डॉ. धर्मदेव विद्यार्थी उसके संयोजक होंगे। डीएवी संस्थान के राष्ट्रीय सचिव श्री महेश जी चोपड़ा ने कहा कि मैंने जीवन में इतना सुंदर कार्यक्रम जो दिव्यांगों द्वारा प्रस्तुत किया गया है कभी नहीं देखा। उन्होंने दिव्यांगों द्वारा बनाए गए परिधानों की प्रशंसा की। डीएवी संस्थान के कोषाध्यक्ष श्री शर्मा जी ने कहा कि डीएवी संस्थान इस प्रकार के परोपकारी कार्यों के लिए आगे आएगा। डीएवी संस्था नईदिल्ली के निदेशक श्री जेपी सुर ने कहा कि डीएवी ने ऐसे स्कूल खोले हैं जो मानसिक रूप से पिछड़े विद्यार्थियों के विकास में लगे हुए हैं। एक ऐसा ही स्कूल अमृतसर में खोला गया है। उन्होंने डॉक्टर धर्मदेव विद्यार्थी को कर्मशील तथा कर्मठ व्यक्ति बताते हुए उनकी प्रशंसा की। कार्यक्रम के संयोजक और डीएवी संस्थाओं के क्षेत्रीय निदेशक डॉ.धर्मदेव विद्यार्थी ने दिव्यांगों के प्रतिभा कौशल की प्रशंसा करते हुए कहा कि बहुत सारे लोगों ने इस समारोह को सफल बनाने के लिए अपना संपूर्ण सहयोग दिया है। संस्थान की नरवाना शाखा के संयोजक श्री धर्मपाल गर्ग और श्रीमती रश्मि विद्यार्थी ने दिव्यांगों व अतिथियों को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया।

नारायण सेवा संस्थान
नर सेवा नारायण सेवा

सहायता

नरेन्द्र को मिला नव - जीवन

कुरुक्षेत्र (हरियाणा) की मूल निवासी नरेन्द्र कौर का विवाह वर्ष 2009 में हुआ। सुखमय जीवन की आस लिए वह ससुराल आई थी, परन्तु उसने सपने में भी नही सोचा था कि उसके साथ कुछ बुरा होने जा रहा है। कुछ दिन तो सब कुछ सामान्य चलता रहा, परन्तु उसके पश्चात ससुराल में उसे आए दिन दहेज की मांग को लेकर प्रताड़ित किया जाने लगा। नरेन्द्र के मध्यम वर्गीय पिता ने उसके विवाह में कोई कमी नही रखी थी। समस्त जमा पूंजी उन्होंने बेटी के विवाह में खर्च कर दी। अब उनके लिए आए दिन बेटी के ससुराल वालों की मांग को पूरा करना संभव नही था। जिसका खामियाजा नरेन्द्र को झुलस कर उठाना पड़ा। यही नहीं उसे घर से बेदखल भी कर दिया गया। नरेन्द्र को समझ नही आ रहा था कि वह झुलसा हुआ चेहरा लेकर अब कैसे जी पायेगी।वक्त ने करवट ली और उसे अपने किसी हितैषी से नारायण सेवा संस्थान की ओर से निष्पादित किये जा रहे विभिन्न निःशुल्क सेवा प्रकल्पों की जानकारी प्राप्त हुई। उसने नारायण सेवा संस्थान से मदद की गुहार लगाई। जिसे देखते हुए नरेन्द्र के चेहरे की प्लास्टिक सर्जरी की व्यवस्था संस्थान की ओर से दानवीर भामाशाहों के माध्यम से करवाई गई।

किडनी ट्रांसप्लाट में मदद

उत्तरप्रदेश और मध्यप्रदेश की सीमा पर स्थित शहर झांसी में मजदूरी का काम करने वाले आलोक तिवारी के पुत्र अनुज (23) को 2-3 वर्ष से किडनी में खराबी की शिकायत थी। परिवार ने शहर के एक प्राईवेट हॉस्पीटल में चेकअप करवाया। जहां चिकित्सकों ने किडनी ट्रांसप्लांट की सलाह दी जिसमें अनुमानतः करीब 7 लाख रूपये का खर्चा बताया। मजदूरी करके 5-6 हजार रूपये माहवार कमाने वाले पिता के पास इतने पैसे नही थे कि वो बेटे का ऑपरेशन करवा सकें,लेकिन पुत्र को खोना भी नही चाहते थे। वे उपचार के लिए पैसे जुटाने में लग गये। कही से थोड़ी मदद मिली तो कही से कर्ज लिया। इधर अनुज की तबीयत लगातार खराब हो रही थी। उन्होंने मजबूरी में कुछ जेवरात भी बेचे फिर भी उपचार खर्च नही जुट पा रहा था। इसी दौरान उन्हे नारायण सेवा संस्थान के द्वारा जटिल रोगों के इलाज में आर्थिक सहायता दिए जाने की जानकारी मिली तो वो तुरंत यहां आये और बेटे के ऑपरेशन के लिए मदद मांगी। संस्थान ने बीमारी की गंभीरता को देखते हुए अनुज तिवारी के उपचार के लिए दो लाख रूपये की मदद उपलब्ध करवाई।

दुनिया में ऐसे कई बच्चें हैं जिन्हें आवश्यकता है इलाज की लेकिन गरीबी के कारण अपना इलाज नहीं करवा पाते और मौत के मुंह चले जाते हैं। आपके सहयोग से ऐसे बच्चों का जीवन बचाया जा सकता है संस्थान के माध्यम से - कृपया मदद करें।

सहायता

दिव्यांग को दी नि:शुल्क स्कूटी

उदयपुर के सविना सेक्टर 12 में रहने वाले सोहन लाल कलाल को संस्थान की ओर से 4 अप्रेल को निशुल्क स्कूटी एवं वॉकर प्रदान किए गए। उल्लेखनीय है कि 15 जून 2015 को अपने काम पर जाते हुए इनकी स्कूटी की एक कार से भिडंत हो गई थी। साधारण परिवार के सोहन ने उदयपुर के महाराणा भूपाल हॉस्पीटल के बाद अहमदाबाद के निजी हॉस्पीटल में भी इलाज करवाया जिसमें इनका काफी खर्चा हो गया। दुर्घटना के दौरान रीढ़ की हड्डी में भारी चोट लगने से ये चलने-फिरने में असमर्थ हो गए। पिछले साढ़े तीन साल से कोई काम भी नहीं कर पा रहे थे। किसी सहारे के साथ कुछ कदम तक चल पाना ही इनकी नियति बन गया। इन्होंने नारायण सेवा संस्थान से एक स्कूटी दिलवाने का आग्रह किया ताकि ये नए सिरे से अपनी जिंदगी शुरु कर सकें। उनकी स्थिति और आग्रह को स्वीकार करते हुए संस्थान अध्यक्ष सेवक प्रशांत भैया व निदेशक श्रीमती वंदना जी अग्रवाल ने उन्हें स्कूटी भेंट की।

पिता की स्मृति में वॉटर कूलर भेंट

नारायण सेवा संस्थान को पलवल (दिल्ली) निवासी युवा उद्यमी रवि मेहता ने 28 मार्च को वॉटर कूलर भेंट किया। यह वॉटर कूलर उन्होंने अपने पिता स्व. विरेन्द्र मेहता की स्मृति को समर्पित किया है, जिसे संस्थान के दिव्यांग विश्रामालय में लगाया गया है। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में संस्थान की मथुरा शाखा के अध्यक्ष दिलीप वर्मा, संस्थान निदेशक देवेन्द्र चौबीसा, विष्णु शर्मा हितैषी, भगवान प्रसाद गौड़ व दल्लाराम पटेल तथा गुजरात के मेहसाना से पधारे श्री मितिश भाई वोरा, श्रीमती दामिनी एम वोरा, श्री सुरेश पटेल व श्रीमती मिनाक्षी पटेल भी उपस्थित थे। संचालन रजनीश शर्मा ने किया ।

खेल प्रतिभाओं को प्रशिक्षण

नारायण सेवा संस्थान-सेवा परमोधर्म ट्रस्ट के आवासीय विद्यालयों की खेल प्रतिभाओं को तराशने की दृष्टि से पिछले दिनों विभिन्न प्रशिक्षण संपन्न हुए। एम.बी कॉलेज ग्राउण्ड पर11 से 17 मार्च तक चले फुटबॉल-हेंडबॉल के सप्त दिवसीय प्रशिक्षण शिविर में अगले चरण के गहन प्रशिक्षण के लिए 15 छात्रों का चयन किया गया। शिविर प्रभारी विकास कुमार तथा कोच पराग वसीटा थे।

जिम्नास्टिक: संस्थान के बड़ी परिसर में जिम्नास्टिक प्रशिक्षण शिविर 18-24 मार्च तक हुआ। जिसमें 16 छात्रों का चयन किया गया। शिविर में सेवा परमों धर्म ट्रस्ट तथा भगवान महावीर बालगृह के 30 विधार्थियों ने भाग लिया। ये सभी कक्षा 6 से 12 तक के विधार्थी थे। कोच सचिन कुमार थे। शिविर में भगवान महावीर बालगृह के कृष्ण कुमार, रणवीर तथा श्रवण को क्रमशः पहला, दूसरा व तीसरा स्थान प्राप्त हुआ।

नारायण सेवा संस्थान
नर सेवा नारायण सेवा

अनुष्ठान

301 दिव्यांग कन्याओं का पूजन

संस्थान में चैत्र नवरात्रि की दुर्गाष्टमी पर 13 अप्रेल को सेवा महातीर्थ बडी में 301 दिव्यांग कन्याओं का पूजन महानुष्ठान हुआ। संस्थान निदेशक वंदना अग्रवाल ने वेदियों पर विराजमान सभी कन्याओं के भाल पर तिलक लगाकर लाल चुनरी ओढ़ाई और हलवा-पुरी का नेवैद्य अर्पित किया। कन्याओं को कंगन, माला, बिंदी आदि श्रृंगार-प्रसाधन सामग्री के साथ ही स्कूल ड्रैस, बैग, स्टेशनरी व पानी की बोटल, टिपिन, खिलौने आदि उपहार भी प्रदान किए गए। देश के विभिन्न प्रांतो से आई पूर्व पोलियोग्रस्त इन कन्याओं के नवरात्रि के दौरान ऑपरेशन सम्पन्न हुए। कार्यक्रम में कन्याओं के परिजनों ने विशेष रूप से संकल्प लिया कि कन्या भ्रूण हत्या, दहेज प्रथा तथा बेटे-बेटी में भेदभाव जैसी कुरीतियों के विरोध में वे सक्रिय योगदान देंगें। प्रातः हुए अनुष्ठान में संस्थापक पूज्य श्री कैलाश जी 'मानव', श्रीमती कमला देवी जी अग्रवाल व सेवक प्रशांत भैया ने प्रेषित अपने संदेश में कहा कि माँ दुर्गा की उपासना से जीवनी शक्ति प्राप्त होती है। दिव्यांग कन्याओं के पूजन के इस मौके पर हमें नारी सशक्तिकरण का संकल्प लेकर सुखी व सुसंस्कृत समाज के निर्माण में अपनी सहभागिता बढ़ानी चाहिए। निदेशक श्रीमती वंदना जी अग्रवाल के स्वर में स्वर मिलाते हुए कन्याओं ने संकल्प लिया कि वे संस्थान में पोलियो करेक्शन ऑपरेशन के बाद अब पूरे आत्म-विश्वास से शिक्षा और अन्य क्षेत्रों में सफलता को अपना लक्ष्य बनाएंगी। ऑपरेशन डॉ. ए.एस चुण्डावत, डॉ. ओडी माथुर व डॉ अंकित चौहान की टीम ने किए। संचालन ओमपाल ने किया।

चिकित्सा के लिए दिए 2.70 लाख

अलवर मूल के उदयपुर में कार्यरत लखन यादव की 3 माह की बच्ची दिशानी यादव के दिल में तीन छेद के ऑपरेशन के लिए कन्या पूजन कार्यक्रम में संस्थान की ओर से 2 लाख 70 हजार रूपये का चैक भेंट किया गया।

संस्थावलोकन

भजन गायिका किरण का आगमन

नारायण सेवा संस्थान के चैनराज सावंतराज पोलियो हॉस्पीटल बड़ी स्थित लियो के गुड़ा में 15 मार्च को सुप्रसिद्ध भजन गायिका किरण डांगी ने 101 जन्मजात पोलियोग्रस्त बच्चों के निःशुल्क चिकित्सा शिविर का उद्घाटन किया तथा ऑपरेशन से स्वस्थ हुए बच्चों, किशोर-किशोरियों से कुशलक्षेम पूछी। मूक-बधिर व विमंदित बच्चों द्वारा तैयार शिल्प एवं रोजगारपरक प्रशिक्षण कार्यों का अवलोकन किया। संचालन आदित्य चौबीसा ने किया।

सहायता शिविर

रामामंडी में कृत्रिम अंग वितरण

नारायण सेवा संस्थान व के.के अग्रवाल परिवार के संयुक्त तत्वावधान में 17 मार्च को रामामंडी, भटिंडा में आयोजित दिव्यांग सहायता शिविर में 82 दिव्यांगजन ने भाग लिया, जिनमें से 66 दिव्यांगजन को कृत्रिम अंग (हाथ-पैर) लगाने के लिए नाप लिए गए। मुख्य अतिथि श्री संकेत थापर थे। अध्यक्षता डॉ अवनीश कुमार ने की। विशिष्ट अतिथि श्री राजिन्दर कुमार राज लहरी, श्री अनिल कुमार विक्की, श्री केवल कृष्ण जी, श्री सतीश जी सिंघला, एवं श्री मनीष कुमार जी थे। शिविर में जरुरतमंद 4 दिव्यांगजन को केलीपर्स और 2 को ट्राई साईकिल प्रदान की गई। 2 दिव्यांगजन का निशुल्क पोलियो करेक्टिव सर्जरी के लिए चयन किया गया। संस्थान की ओर से डॉ. लोकेन्द्र जी व रोहित जी तथा डॉ. नेहा अग्निहोत्री की टीम ने दिव्यांगजन की जांच एवं चयन किया। साधक श्री भंवर सिंह, श्री प्रफुल्ल व्यास, प्रवीण देराश्री व हितेश सेन की टीम ने शिविर व्यवस्था में सहयोग किया।

औरंगाबाद में दिव्यांगों को उपहार

नारायण सेवा संस्थान के तत्वावधान में रमणीकलाल प्रेमजी भाई पटेल के सौजन्य से औरंगाबाद (महाराष्ट्र) के अभिषेक अपार्टमेंट में 12 मार्च 2019 को निशुल्क कृत्रिम अंग वितरण शिविर आयोजित किया गया। जिसमें पी एण्ड ओ श्री निवास ने परीक्षण कर 36 दिव्यांगजन को कृत्रिम हाथ-पैर लगाए। ये वे दिव्यांग थे जो जन्मजात अथवा किसी दुर्घटना में अपने हाथ- पैर गंवा चुके थे। शिविर का उद्घाटन महापौर श्री नंदकुमार घोड़ेले ने किया। अध्यक्षता मुंबई के समाजसेवी श्री रामजी भाई प्रेमजी पटेल ने की। विशिष्ट अतिथि आमदार श्री अतुल सावे, सेवानिवृत न्यायाधीश श्री एस. एस बग्गा, एम आई टी अध्यक्ष श्री यज्ञविर कवडे, श्री राहुल भैया पटेल, डॉ. माधव हंडे, श्री बाबूभाई पटेल, श्री गजानन दिग्रसर व श्री गणेश वरकड आदि उपस्थित थे। शिविर में 53 दिव्यांगों का पंजीयन हुआ।

नारायण सेवा संस्थान
नर सेवा नारायण सेवा

स्कूली बच्चों की सहायता

मानव कमल कैलाश सेवा संस्थान के तत्वावधान में पिछले दिनों जरूरतमंद छात्र-छात्राओं को निःशुल्क जूते-चप्पल एवं स्टेशनरी वितरित की गई। संस्थान संस्थापक-चैयरमेन पूज्य कैलाश जी 'मानव' एवं सह संस्थापिका कमला देवी जी अग्रवाल के निर्देशानुसार 25 मार्च को राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, बाबरिया खेडा पं. स.-भूपालसागर में 60 से अधिक जरूरतमंद छात्र-छात्राओं को जूते-चप्पल की जोड़ी वितरित की गई। बडगांव पंचायत समिति के राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, उपली बड़ी में 16 मार्च को 120 से अधिक छात्र-छात्राओं को स्टेशनरी किट वितरित किए गए। 27 मार्च को भीण्डर पंचायत समिति के गांव खरसाण में बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय की 55 से अधिक छात्राओं को चप्पल की जोड़ीयां वितरित की गई। 28 मार्च को उदयपुर महिला एवं बाल विकास समिति सेक्टर-5 के 50 बच्चों व राजकीय बालिका प्राथमिक विद्यालय सेक्टर-6 की 40 बालिकाओं को स्टेशनरी वितरित की गई। इन शिविरों के प्रभारी कुलदीप सिंह शेखावत थे। सहयोग राजकुमार मेनारिया, शीतल अग्रवाल, ओम प्रकाश गौड़, मनोज नागर व तुषांत जैन ने किया। **गौशाला को चारा:** 29 मार्च को नगर निगम के काईन हाउस (गौशाला) को संस्थान की ओर से पशुओं के लिए हरा चारा प्रदान किया गया। काईन हाउस को 600 किलोग्राम से अधिक हरा चारा दिया गया। काईन हाउस प्रभारी नाथुलाल ने संस्थान को गौ सेवा के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया।

स्नेह मिलन

सेवा मनीषियों का स्नेह सम्मेलन

-चैत्र नवरात्रि दिव्यांग कन्या निःशुल्क ऑपरेशन शिविर का उद्घाटन करते हुए मानवजी व अतिथि

नारायण सेवा संस्थान के तत्वावधान में 7 अप्रेल को सेवा महातीर्थ, बड़ी में संस्थान सहयोगियों का स्नेह सम्मेलन संपन्न हुआ। जिसमें 250 से अधिक सहयोगियों ने भाग लिया। संस्थान संस्थापक पद्मश्री कैलाश जी मानव के सानिध्य में दिव्यांग कन्याओं के निःशुल्क नवरात्रि ऑपरेशन शिविर का उद्घाटन किया गया। उन्होंने संस्थान के सेवा प्रकल्पों की जानकारी देते हुए उनमें सहभागिता के लिए सहयोगियों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि सेवा और परोपकार तभी हो सकते हैं जब व्यक्ति में संवेदना और भावना हो। स्नेह सम्मेलन में विशिष्ट अतिथि श्री हरपाल अग्रवाल, श्री चरणजीत कालरा,श्रीमती प्रेम कुमारी गुड़गांव, श्रीमती बृजबाला, श्रीमती कुसुम गुप्ता, नई दिल्ली, नलिनी बेन जामनगर, नंद किशोर बत्रा जयपुर, श्री कैलाश चन्द्र गौड़ अजमेर, श्री नानजी भाई राजकोट थे। विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय सेवा कार्यो के लिए सेवा मनीषियों को सम्मानित किया गया। संचालन महिम जैन ने व धन्यवाद ज्ञापन दल्लाराम पटेल तथा रोहित तिवारी ने किया।

सेवा और सम्मान

नारायण सेवा संस्थान के माध्यम से देश के विभिन्न शहरों-कस्बों में दिव्यांगजन की निःशुल्क शल्य चिकित्सा, पुनर्वास, जरूरतमंद दीन-दुखियों की सेवा, निराश्रित बच्चों की शिक्षा एवं प्रशिक्षण में सहभागी सहयोगियों एवं भामाशाहों के आत्मीय स्नेह मिलन एवं सम्मान समारोह आयोजित हुए।

भायंदर

मुम्बई के भायंदर में नारायण सेवा संस्थान के श्री उमराव सिंह जी ओस्तवाल की अध्यक्षता मे 24 मार्च को स्नेह मिलन व भामाशाह सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें जरुरतमंदों को निशुल्क व्हील चेयर वितरण के साथ ही संस्थान के सेवा कार्यों में सहयोग के लिए डोनेशन बॉक्स वितरित किए गए। अतिथियों का स्वागत कमल लोढ़ा ने किया। उन्होंने बताया कि भायंदर में निशुल्क फिजियोथेरेपी सेंटर भी सुचारू रूप से चल रहा है जिसमें रोजाना 40 से 50 रोगी लाभ ले रहे हैं। कार्यक्रम में श्रीमती सीमा पारेख, श्री किशोर जैन, श्री देवेंद्र वखारिया, श्रीमती सरिता नाइक, श्री दीपक शर्मा, श्री नीलेश गांधी, श्रीमती मनीषा परमार, श्रीमती प्रियंका दुबे, श्रीमती भक्ति, श्रीमती नीलम जी, श्रीमती सुजाता, श्रीमती मुनमुन पाल, श्रीमती संगीता जी, श्री गुलाब, श्रीमती ऋतु कपिल, श्री कीर्ति कोठारी, श्री बलविंदर रविसोडा, श्रीमती शीला शर्मा, श्री धर्मेंद्र शर्मा, श्री मनोज जैन, श्री बाबूलाल शर्मा श्रीमती रजनी, श्री महावीर सुराणा, श्री गौतम सेठिया, श्री कनक बुच्चा, श्री प्रवीण परमार आदि ने संस्थान के कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने पर विचार व्यक्त किए।

श्रीगंगानगर

श्रीगंगानगर (राजस्थान) के न्यू कंगन पैलेस, सुखाडिया नगर में 24 मार्च 2019 को संस्थान द्वारा आयोजित स्नेह मिलन समारोह में संस्थान के सहयोगी भामाशाहों के सम्मान के साथ निशुल्क सेवाओं के विस्तार पर विचार किया गया। विशिष्ट अतिथि श्री श्याम सुन्दर माहेश्वरी, श्री के.बी लीला, श्री ओमप्रकाश सुखेजा, श्री रामगोपाल जी जसुजा, श्री राजेन्द्र प्रसाद शर्मा, श्री बी.के शर्मा, श्री आसेश्वर प्रसाद, श्री कपिल सेतिया, श्री जब्बर सिंह, श्री बिन्दू गोस्वामी, श्री नवल जी, श्री संदीप कुमार एवं श्री विजय गोयल थे। कार्यक्रम प्रभारी श्री राजमल शर्मा ने अतिथियों का स्वागत किया। संचालन सुशील कौशिक ने किया।

जोधपुर

जोधपुर (राज.) के अमारा रिसोर्ट, ट्री हाऊस बुटीक होटल, चोपासनी रोड़, फिल्टर हाऊस में 7 अप्रेल 2019 को संस्थान के स्नेह मिलन समारोह में संस्थान के सहयोगी भामाशाहों का सम्मान किया गया। विशिष्ट अतिथि श्री सतीश जी पुरोहित, श्री मुरली सिंह जी भाटी, श्री राजूभाई कादरी, श्री बद्री कृष्ण जी व्यास, श्रीमती कविता जी अरोड़ा, श्रीमती कमला जी परिहार व श्रीमती कान्ता जी मल्होत्रा थी। प्रभारी श्री विक्रम सिंह चौहान ने अतिथियों का स्वागत किया। संचालन कुंज बिहारी मिश्रा ने किया।

नारायण सेवा संस्थान
नर सेवा नारायण सेवा

दीनबन्धु वार्ता एवं सत्संग

श्री राम -कृष्ण कथा एवं दीन बंधु वार्ता

संस्थान के लियों का गुड़ा (बड़ी) स्थित सेवा महातीर्थ में 1 से 5 अप्रेल तक पूज्य गुरुदेव श्री कैलाश जी 'मानव'ने 'श्रीराम-कृष्ण अवतार कथा' एवं अपनों से अपनी बात कार्यक्रम में संस्थान में देश के विभिन्न भागों से निशुल्क पोलियो करेक्टिव सर्जरी के लिए आने वाले दिव्यांगजनों के साथ अपने विचार साझा किये। 'आस्था चैनल पर प्रसारित उनके विचारों को यहां संक्षिप्त रुप में प्रस्तुत किया जा रहा है। संचालन महिम जैन एवं ओमपाल सीलन ने किया।

लाभ को लोभ में न बदलें

पवित्र मन से जो काम करता है उसका परमात्मा मददगार होता है। मानव मन की व्यथा को दूर करने की सर्वोत्तम औषधि प्रभु का स्मरण है। साधक के जीवन में आने वाली बाधाएं मूल रूप से उसके अंतर की प्रवृत्तियां ही हैं। लाभ की प्रवृत्ति व्यक्ति को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित तो करती है लेकिन जब लाभ के साथ लोभ जुड़ जाता है तो वह दंभ में बदल जाता है। राम और कृष्ण का चरित्र हमें जीवन को धन्य बनाने का दिव्य मार्ग दर्शाता है। इनकी कथाओं को सुनने से जीवन में व्यथा शांत हो जाती है और प्रेम का स्फुरण होता है। बिना आत्मज्ञान के परमात्मा की प्राप्ति संभव नहीं है। आत्मज्ञान का अर्थ है, संसार में अपने जन्म को सार्थक करने की दिशा में सतत् जागरुक रहते हुए परोपकार के लिए समर्पित रहना। परमात्मा स्वंय भी व्यक्ति को अपने कर्म का स्मरण दिलाने के लिए सदा ज्ञान गीता के साथ सारथी रुप में तत्पर रहते हैं। प्राणी मात्र को अपने धर्म व कर्म को भूलना नहीं चाहिए। अगर व्यक्ति धर्म भूलेगा तो अपने कर्म से विमुख हो जाएगा। शान्ति की स्थापना के लिए धर्म से बड़ा संसार में कोई और कर्म नहीं है। जीवन का निर्माण करना चाहते हैं, तो आत्म मंथन करना सीखें। आत्मा में अनंत शक्ति है। कर्मो का आवरण इस शक्ति को ढक देता है। यह आवरण आत्म मंथन से ही हटेगा। ज्ञान, दर्शन और चरित्र के योग से साधना करने पर शाश्वत सुख की प्राप्ति होगी। बिना भक्ति के व्यक्ति सुख की कामना नहीं कर सकता। व्यक्ति को जीवन में अहंकार और पाखंड से दूर रहना चाहिए। यह दोनों ही अवगुण व्यक्ति के जीवन को बर्बाद कर देते हैं। मानव को अपने जीवन में अपने कर्म और धर्म पर ध्यान देना चाहिए।

कथा ज्ञान यज्ञ

परिवार की नींव प्रेम

ज्ञान से धर्म का बोध होता है। ज्ञान प्राप्त करने के लिए सत्संग आवश्यक है। सत्संग में एकाग्रता से जो बातें विद्वानों द्वारा कही जाती हैं उनका अनुसरण करना चाहिए। ज्ञान का बोध होने पर व्यक्ति अज्ञानता रूपी अंधकार से बच जाता है और उसका जीवन प्रकाशवान हो जाता है। ये विचार नारायण सेवा संस्थान द्वारा बालोदा बाजार (छ.ग.) में दिव्यांगों की सहायतार्थ 25 मार्च से 31 मार्च तक आयोजित सप्तदिवसीय श्रीमद् भागवत कथा में व्यासपीठ से कथा वाचिका पूज्या जया किशोरी जी ने व्यक्त किए। उन्होंने कहा प्रेम परिवार की नींव है, और जिस परिवार में स्नेह प्रेम, शांति व सुख होता है वह परिवार मंदिर के समान है और जहां मंदिर है, परमात्मा वहां स्वयं आ जाते हैं। कथा का सीधा प्रसारण संस्कार चैनल पर हुआ, संचालन कुंज बिहारी मिश्रा ने किया।

प्रभु प्राप्ति हो वही साधना श्रेष्ठ

जिस साधना के द्वारा भगवान की प्राप्ति हो जाए वहीं श्रेष्ठ है। जो प्राणी भगवान के कथा प्रसंग से विमुख रहता है उसे संसार में फसना ही पड़ता है। ये विचार नारायण सेवा संस्थान द्वारा मथुरा (उ.प्र) के राधेश्याम आश्रम में 5 से 11 मार्च तक आयोजित दिव्यांगों की सहायतार्थ सप्तदिवसीय श्रीमद् भागवत कथा में कथा वाचक श्री मुकुंद हरि महाराज ने व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि भगवान श्रीकृष्ण का मन चंचल जरूर था, मगर इच्छा शक्ति मजबूत थी। यदि हमें भी अपनी इच्छा शक्ति को मजबूत रखना है तो मन में अच्छे विचारों के बीज बोएं। कार्यक्रम का सीधा प्रसारण साधना चैनल पर किया गया।

जीव को सुख-दुख देने वाला उसका अपना कर्म

कर्म ही ईश्वर है, कर्म ही गुरु है। कर्म से ही जीव का जन्म होता है और कर्म में ही वह लीन हो जाता है। सुख, दुख, भय सब कर्म में ही निहित है। कर्म न करने वाले को कभी सुख व शांति की प्राप्ति नहीं होती। ये विचार नारायण सेवा संस्थान द्वारा बिहार के बाँका जिला स्थित गांव कदराच' में दिव्यांगों की सहायतार्थ सप्तदिवसीय श्रीराम कथा में 12 से 18 मार्च के दौरान कथा वाचिका पूज्या प्राची देवी जी ने व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि जीव को सुख-दुख देने वाला और कोई नहीं, बल्कि उसका ही कर्म होता है। भगवान श्री राम ने लोगों को जीवन जीने की राह दिखाई है। कार्यक्रम का सीधा प्रसारण आस्था-भजन चैनल पर किया गया। संचालन कुंज बिहारी मिश्रा ने किया।

जब भी बोलें, मीठा बोलें

भक्ति, ज्ञान, वैराग्य और त्याग का संयोग ही भागवत है। कलयुग में हर प्राणी के लिए श्रीमद् भागवत कथा सर्वश्रेष्ठ है। प्रार्थना ऐसी संस्कृति है जिससे भगवान को प्राप्त किया जा सकता है। प्रार्थना से भगवान प्रसन्न होते हैं और कष्ट दूर करते हैं। ये विचार नारायण सेवा संस्थान द्वारा चित्रकूट धाम मथुरा (उ.प्र) में दिव्यांगों की सहायतार्थ सप्तदिवसीय श्रीमद् भागवत कथा में 13 से 19 मार्च तक कथा वाचिका पूज्या राधा किशोरी जी ने व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि व्यक्ति को सदैव मीठा बोलना चाहिए, क्योंकि हर कोई अच्छी वाणी सुनना चाहता है। व्यक्ति को वाणी का सदुपयोग करना चाहिए। उन्होने आगे बताया कि भक्ति की तीन धाराएं हैं विश्वास, संबंध और समर्पण। जीवन में इन तीनों का समावेश जरूरी है। इसी प्रकार जीवन में कष्ट देने वाले तीन शूल होते हैं- काम, क्रोध और मोह। जिनसे दूर रहना जरुरी है। कार्यक्रम का सीधा प्रसारण साधना चैनल पर किया गया। संचालन अनामिका दीक्षित ने किया।

नारायण सेवा संस्थान
नर सेवा नारायण सेवा

सेवायात्रा

झीनी-झीनी रोशनी (6)

नारायण सेवा संस्थान के संस्थापक-चेयरमैन परमपूज्य गुरूदेव श्री कैलाश जी 'मानव' का माता-पिता श्रीमती सोहनी देवी जी व पिताश्री मदनलाल जी अग्रवाल के सेवा-संस्कारों से पोषित जीवन समाज के लिए अनुकरणीय और उदाहरणीय है। संकल्पित और समर्पित सेवा धर्म ने उन्हें सामाजिक व धार्मिक सेवा क्षेत्र में अनेक सम्मानों से विभूषित किया। जिनमें भारत सरकार द्वारा पद्म (पद्मश्री) एवं संत समाज द्वारा 'आचार्य महामण्डलेश्वर' सम्मान भी शामिल है। बचपन से ही सेवा के संस्कारों से पल्लवित कैलाश जी के अत्यन्त निकट रहे वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश गोयल ने उनके जीवन-वृत को 'झीनी-झीनी रोशनी' नामक पुस्तक में अत्यन्त सहज, सरल और भाव प्रणव भाषा में लिखा है।

कैलाश को यह बात समझ में नहीं आई तो मदन ने समझाया कि ताऊजी कितना भी डांटे- फटकारें जाजम का एक कोना पकड़ कर बैठ जाना, भागना मत। दुकानों पर जाजमें ही बिछती थीं। टेबल-कुर्सीयां तो बस स्कूल में ही दिखाई देती थीं। कैलाश गया और डरते -डरते ताऊजी को बताया कि उससे एक पाई कहीं गिर गई है। देवीलाल को बहुत गुस्सा आया, बात एक पाई की नहीं लापरवाही की थी। उसने कैलाश को कह दिया कि जा यहां से, अब दुकान पर आने की जरुरत नहीं पर कैलाश को बापूजी ने ज्ञान दे दिया था, वह सिर झुकाकर ताऊजी की फटकार सुनता रहा मगर उठा नहीं। देवी लाल उसको वहां से जाने के लिए कहता रहा लेकिन वह टस से मस नहीं हुआ, आँखों से अश्रुओं की अविरल धारा बहती रही मगर उसने जाजम नहीं छोड़ी। कैलाश ने जीवन में एक बड़ी बात उस दिन सीख ली थी कि जाजम कहीं नहीं छोड़ना।

इसी तरह एक बार और कैलाश को ताऊजी के क्रोध का सामना करना पड़ा। उसकी उम्र के सभी बच्चे साईकिल चलाना सीखते थे। वह भी साईकिल सीखने किराये पर साईकिल लाया मगर पहले ही दिन साईकिल से गिर गया और हाथ टूट गया। देवीलाल को इस बात का पता चला तो बहुत गुस्सा हुआ। आग बबूला होते हुए कैलाश से पूछा साईकिल चलाने के लिए पैसे कहां से लाया। कैलाश चुप रहा तो उसने कहा बोल, नही तो तेरा दूसरा हाथ भी तोड़ दूंगा। कैलाश ने रोते-रोते बताया कि पैसे बापूजी ने दिये तब उसका गुस्सा शांत हुआ।

कैलाश को रोज एक पाई मिलती थी। मदन कई बार उसे गल्ले से एक पाई लेने को कह देता था। एक दिन लालच में आकर उसने एक की बजाय दो पाई उठा ली, सोचा किसी को पता भी नहीं चलेगा। डर रहा था बापू जी कहीं उससे पूछ न ले इसलिए दौड़कर दुकान से भाग गया। चोरी तो उसने कर ली मगर वह पैसे कहीं खर्च नहीं कर पाया। अपराध बोध होता रहा तो उसने यही तय किया कि अगले दिन की एक पाई वह नहीं लेगा, बापूजी को पता चलेगा तो वह डाटेंगे। अगले दिन उसने यही किया तब जाकर उसके मन को शांति मिली।

क्रमशः

विश्व क्षय दिवस पर जनजागरूकता कार्यशाला

विश्व क्षय दिवस के उपलक्ष्य में 24 मार्च को चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग, उदयपुर के जिला क्षय निवारण केन्द्र एवं नारायण सेवा संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में संस्थान के बड़ी सभागार में जन जागरूगता एवं कार्यशाला का आयोजन हुआ। मुख्य वक्ता जिला क्षय अधिकारी डॉ. दिनेश कोठारी थे। उन्होंने बताया कि विश्व स्वास्थ संगठन के अनुसार विश्व में 2 अरब से ज्यादा लोगों को क्षय संक्रमण हैं। इस बीमारी से भारत में आज भी प्रति 3 मिनट में 2 व्यक्ति मौत के मुंह में समा जाते हैं। राजस्थान में प्रति वर्ष करीब 30 हजार व्यक्ति इस रोग के कारण मरते हैं और तकरीबन 5 हजार महिलाएं घर छोड़ने को विवश होती हैं और 20 प्रतिशत बच्चे स्कूल जाने से वंचित रहते हैं। कार्यक्रम को बाल कल्याण समिति की अध्यक्ष डॉ. प्रीति जैन, सदस्य डॉ. बी.के. गुप्ता एवं कार्यक्रम समन्वयक नारायण सेवा के संजय दवे ने भी सम्बोधित किया। इस अवसर पर संस्थान के आवासीय विद्यालय तथा भगवान महावीर बालग्रह के बच्चे भी उपस्थित थे।

दिव्यांगजन की चिकित्सा में सहायता के लिए आपश्री का हार्दिक आभार

श्री राज कुमार मंदेलिया
होली वेस्ट बंगाल

श्री रामेश्वर राठौड़
मंदसौर (म.प्र.)

श्रीमती धुरीबाई
मंदसौर (म.प्र.)

श्री राजेन्द्र प्रसाद
मंदसौर (म.प्र.)

श्रीमती मीना
मंदसौर (म.प्र.)

स्व.श्रीमती कमला भंडारी
नासिक (म.ह.)

श्रीमती शारदा बख्शी,यमुनानगर (हरियाणा)

श्री आनन्द राज सिंधी,सूरत (गुजरात)

श्रीमती अंजली महाजन
कांगडा (हि.प्र.)

श्री प्रेम सिंह-श्रीमती कैलाश देवी
पंजावड (हिमाचल प्रदेश)

श्री भंवर लाल जोशी
श्रीमती सीता देवी
अजमेर (राजस्थान)

श्री तेज लाल मिश्रा
स्व. श्रीमती उर्मिला मिश्रा
झांसी (उत्तर प्रदेश)

श्री जगबीर सिंह-श्रीमती जगवती देवी, मेरठ केन्ट
(उत्तर प्रदेश)

श्री रामु-श्रीमती कोडे सुमन
हैदराबाद
(तेलंगाना)

श्री नरेश कुमार आर. चौहान
श्रीमती प्रीती एन. चौहान
गौरेगांव (मुम्बई)

श्री राम निवास शर्मा-
श्रीमती आशा
अजमेर (राजस्थान)

श्री एवं श्रीमती स्वरूप चन्द
उत्तमचन्द कोठारी
जलगांव (महाराष्ट्र)

श्री नवीन चन्द्र चन्दुलाल सेठ
श्रीमती ज्योत्सना
भरूच (गुजरात)

श्री बुची रेड्डी- श्रीमती एम.
सुलोचना रेड्डी
हैदराबाद (तेलंगाना)

श्री बी.एल. बदाया-श्रीमती विद्या देवी,
जयपुर (राजस्थान)

श्री हिरा लाल जैन-श्रीमती सुदेश
लुधियाना (पंजाब)

प्रो. गोविन्द नारायण मिश्रा
श्रीमती कुसुम, बीकानेर (राज.)

नारायण सेवा संस्थान
नर सेवा नारायण सेवा

Donate

दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों की करें मदद - बनें पुण्य के भागी

संस्थान के सभी सेवा प्रकल्पों को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए दानी सज्जनों की आवश्यकता है। आपश्री द्वारा प्रदान किये गये सहयोग का सदुपयोग दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के ऑपरेशन, दवाई, भोजन एवं शिक्षा की सेवा में किया जाता है।

क्र.सं.	दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों की संख्या	प्रति ऑपरेशन (धर्म माता-पिता)	प्रति ऑपरेशन दवाई	एक माह				सहयोग राशि (रु)	सर्वांग सेवा एक मुश्त सहयोग राशि(रु)
				भोजन	शिक्षा	हुनर	स्पोर्ट्स		
01	1	5000	1100	1500	500	400	600	9100	8100
02	2	9500	2200	3000	1000	800	1200	18200	16200
03	3	13000	3300	4500	1500	1200	1800	27300	24300
04	5	21000	5500	7500	2500	2000	3000	45500	40500
05	11	45000	12100	16500	5500	4400	6600	99500	89100
06	21	85000	23100	31500	10500	8400	12600	191100	170100
07	51	190000	56100	76500	25500	20400	30600	464100	413100

बनें नित्यदानी पालनहार भामाशाह

मासिक पालनहार भामाशाह	त्रैमासिक पालनहार भामाशाह	अर्द्धवार्षिक पालनहार भामाशाह	वार्षिक पालनहार भामाशाह

आपश्री द्वारा प्रदान किये गये सहयोग का सदुपयोग दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के ऑपरेशन, दवाई, भोजन एवं शिक्षा की सेवा में किया जाता है।

'निःशुल्क दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ सामूहिक विवाह समारोह' हेतु करें सहयोग

जोड़ा संख्या	मेहंदी	श्रृंगार	पोशाक	बिन्दौली वरमाला	वर-माला	पणि-ग्रहण संस्कार	उपहार	बारात आवा-गमन	भोजन (6 व्यक्ति) 3 दिन	कुल सहयोग राशि (रु)	आंशिक कन्या दान (एक मुश्त)	कन्या दान धर्म माता-पिता (एक मुश्त)
1	1000	5500	6500	3100	1100	10000	16800	5000	6000	55000	21000	51000
2	2000	11000	13000	6200	2200	20000	33600	10000	12000	110000	42000	102000
3	3000	16500	19500	9300	3300	30000	50400	15000	18000	165000	63000	153000
5	5000	27500	32500	15500	5500	50000	84000	25000	30000	275000	105000	255000
11	11000	60500	71500	34100	12100	110000	184800	55000	66000	605000	231000	561000
21	21000	115500	136500	65100	23100	210000	352800	105000	126000	1155000	441000	1071000
51	51000	280500	331500	158100	56100	510000	856800	255000	306000	2805000	1071000	2601000

नारायण सेवा संस्थान
नर सेवा नारायण सेवा

शिविर सहयोग

आपश्री अपने जन्म स्थल या कर्म भूमि पर शिविर का आयोजन कराकर पीड़ित मानवता की सेवा करें।

क्र.सं.	शिविर प्रकार	सहयोग राशि
01	विशाल निःशुल्क दिव्यांग जांच एवं चयन शिविर	51000
02	विशाल निःशुल्क दिव्यांग जांच एवं चयन एवं उपकरण वितरण शिविर	151000
03	विशाल निःशुल्क कृत्रिम अंग निर्माण एवं वितरण शिविर	500000
04	विशाल निःशुल्क दिव्यांग शल्य चिकित्सा शिविर	700000
05	विशाल निःशुल्क अन्न, वस्त्र एवं दवा वितरण शिविर	101000

आजीवन संरक्षक

आजीवन संरक्षक सहयोग राशि - 51000 रुपये

1- आपश्री द्वारा प्रदान किया गया सहयोग संस्थान के कॉरपस फण्ड (स्थायी निधि) में जमा होगा, जिसका उपयोग दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों की सेवा में किया जायेगा।

2- आपश्री वर्ष में 2 बार 4 व्यक्ति पूर्वसूचित सूचना के आधार पर संस्थान के अतिथि भवन में वातानूकूलित आवास, वाहन तथा शुद्ध शाकाहारी भोजन की सुविधा का लाभ ले पायेंगे।

3- आपश्री वर्ष में अधिकतम 8 दिवस तक उक्त सुविधा का लाभ ले पायेंगे।

4- आपश्री के साथ संस्थान के प्रॉटोकॉल अधिकारी रहेंगे।

5- आपश्री को श्रीनाथजी दर्शन, उदयपुर भ्रमण एवं संस्थान का अवलोकन कराया जायेगा।

6- आपश्री संस्थान में नैचुरोपेथी चिकित्सा का लाभ चिकित्सक परामर्श के अनुसार ले सकते हैं।

7- आपश्री की उक्त सुविधाओं की वैधता अवधि अधिकतम 14 वर्ष रहेगी।

8- डॉनर के साथ रोगी/परिचारक होने पर उन्हें (रोगी/परिचारक) उचित चिकित्सा हेतु वार्ड में ही रूकना होगा।

9- इस कार्ड का उपयोग आपश्री स्वयं कर पायेंगे ।

आजीवन सदस्य

आजीवन सदस्य सहयोग राशि - 21000 रुपये

1- आपश्री द्वारा प्रदान किया गया सहयोग संस्थान के कॉरपस फण्ड (स्थायी निधि) में जमा होगा, जिसका उपयोग दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों की सेवा में किया जायेगा।

2- आपश्री वर्ष में 1 बार 2 व्यक्ति पूर्वसूचित सूचना के आधार पर संस्थान के अतिथि भवन में वातानूकूलित आवास, वाहन तथा शुद्ध शाकाहारी भोजन की सुविधा का लाभ ले पायेंगे।

3- आपश्री वर्ष में अधिकतम 3 दिवस तक उक्त सुविधा का लाभ ले पायेंगे।

4- आपश्री के साथ संस्थान के प्रॉटोकॉल अधिकारी रहेंगे।

5- आपश्री को श्रीनाथजी दर्शन, उदयपुर भ्रमण एवं संस्थान का अवलोकन कराया जायेगा।

6- आपश्री संस्थान में नैचुरोपेथी चिकित्सा का लाभ चिकित्सक परामर्श के अनुसार ले सकते हैं।

7- आपश्री की उक्त सुविधाओं की वैधता अवधि अधिकतम 14 वर्ष रहेगी।

8- डॉनर के साथ रोगी/परिचारक होने पर उन्हें (रोगी/परिचारक) उचित चिकित्सा हेतु वार्ड में ही रूकना होगा।

9- इस कार्ड का उपयोग आपश्री स्वयं कर पायेंगे ।

हृदय रोग एवं गम्भीर बीमारियों से पीड़ित मासूमों के लिये करें सहयोग

संख्या	सहयोग राशि
1 बच्चे के ऑपरेशन हेतु प्रारम्भिक सौजन्य	1,25,000
1 बच्चे के ऑपरेशन हेतु आंशिक सौजन्य	31,000
1 बच्चे के ऑपरेशन हेतु दवाई सौजन्य	21,000

अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें-0294-6622222

नारायण सेवा संस्थान
नर सेवा नारायण सेवा

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ अथवा दिवंगत परिजनों की पुण्यस्मृति में दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु सहयोग कर इस दिन को यादगार बनायें....यह राशि संस्थान के कॉरपस फण्ड(स्थायी निधि) में जाती है, जिसके ब्याज से प्राप्त राशि से आजीवन वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग करवाई जायेगी । आपश्री स्वयं पधारकर अपने कर-कमलों से निवाला खिलायें।

क्र.सं.	विवरण	सहयोग राशि
01	नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000
02	दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000
03	एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000
04	नाश्ता सहयोग राशि	7000

दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए कृत्रिम अंग एवं सहायक उपकरण हेतु सहयोग राशि

क्र.सं.	दिव्यांग सहायक उपकरण	1 नग	2 नग	3 नग	5 नग	11 नग
01	श्रवण यंत्र	750	1500	2250	3750	8250
02	वैशाखी	500	1000	1500	2500	5500
03	वॉकर	1100	2200	3300	5500	12100
04	केलीपर	2000	4000	6000	10000	22000
05	व्हील चेयर	4000	8000	12000	20000	44000
06	तिपहिया साईकिल	5000	10000	15000	25000	55000
07	कृत्रिम हाथ/पैर	10000	20000	30000	50000	110000
08	स्कूटी	85000	170000	255000	425000	935000

एनएसएस पैरा स्पोर्ट्स एकेडमी

(वॉलीबॉल, बॉस्केटबॉल, बैडमिन्टन, चैस, टेबलटेनिस)

भारत के प्रतिभाशाली दिव्यांग खिलाड़ियों को राष्ट्रीय स्तर की सुविधा उदयपुर में प्रदान करने हेतु संस्थान द्वारा एनएसएस पैरा स्पोर्ट्स एकेडमी का निर्माण किया जा रहा हैं जिसमें सभी प्रकार के खेलों में खिलाड़ियों को प्रशिक्षित कोच द्वारा प्रशिक्षण दिया जायेगा। इस हेतु 27 बीघा (लगभग 9 एकड) जमीन ली गई हैं, जिसके लिए भूदानियों एवं निर्माण सहयोगियों की आवश्यकता हैं। आपश्री भूदानी एवं निर्माण सहयोगी बनने का सुअवसर प्राप्त कर सकते हैं। आपका शुभनाम शिलालेख पर स्वर्ण अक्षरों में अंकित किया जायेगा। इस एकेडमी पर तकरीबन 10 करोड़ का खर्च आना हैं। अतः भूदानी एवं निर्माण सहयोगी बनकर अधिक से अधिक सहयोग कर दिव्यांग बच्चों को ओलम्पिक के लिए प्रशिक्षित करने हेतु प्रोत्साहित करायें।

क्र.सं.	विवरण	सहयोग राशि
01	भूदान सहयोगी	21000 रूपये
02	निर्माण सहयोगी	51000 रूपये

दानवीर भामाशाह

1. आपश्री के कार्ड की वैधता अधिकतम 7 वर्ष रहेगी।
2.आपश्री वर्ष में 4 बार 6 व्यक्ति पूर्वसूचित सूचना के आधार पर संस्थान के अतिथि भवन में वातानूकूलित आवास, वाहन तथा शुद्ध शाकाहारी भोजन की सुविधा का लाभ ले पायेंगे।
3. आपश्री वर्ष में अधिकतम 28 दिवस तक उक्त सुविधा का लाभ ले पायेंगे।
4. आपश्री के साथ संस्थान के प्रॉटोकॉल अधिकारी रहेंगे।
5. आपश्री को श्रीनाथजी दर्शन, उदयपुर भ्रमण एवं संस्थान का अवलोकन कराया जायेगा।
6. आपश्री संस्थान में नैचुरोपेथी चिकित्सा का लाभ चिकित्सक परामर्श के अनुसार ले सकते हैं।
7. डॉनर के साथ रोगी/परिचारक होने पर उन्हें (रोगी/परिचारक) उचित चिकित्सा हेतु वार्ड में ही रूकना होगा।
8. इस कार्ड का उपयोग आपश्री स्वयं कर पायेंगे ।

1. आपश्री के कार्ड की वैधता अधिकतम 4 वर्ष रहेगी।
2. आपश्री वर्ष में 2 बार 3 व्यक्ति पूर्वसूचित सूचना के आधार पर संस्थान के अतिथि भवन में वातानूकूलित आवास, वाहन तथा शुद्ध शाकाहारी भोजन की सुविधा का लाभ ले पायेंगे।
3. आपश्री वर्ष में अधिकतम 10 दिवस तक उक्त सुविधा का लाभ ले पायेंगे।
4. आपश्री के साथ संस्थान के प्रॉटोकॉल अधिकारी रहेंगे।
5. आपश्री को श्रीनाथजी दर्शन, उदयपुर भ्रमण एवं संस्थान का अवलोकन कराया जायेगा।
6. आपश्री संस्थान में नैचुरोपेथी चिकित्सा का लाभ चिकित्सक परामर्श के अनुसार ले सकते हैं।
7. डॉनर के साथ रोगी/परिचारक होने पर उन्हें (रोगी/परिचारक) उचित चिकित्सा हेतु वार्ड में ही रूकना होगा।
8. इस कार्ड का उपयोग आपश्री स्वयं कर पायेंगे ।

1. आपश्री के कार्ड की वैधता अधिकतम 5 वर्ष रहेगी।
2. आपश्री वर्ष में 3 बार 4 व्यक्ति पूर्वसूचित सूचना के आधार पर संस्थान के अतिथि भवन में वातानूकूलित आवास, वाहन तथा शुद्ध शाकाहारी भोजन की सुविधा का लाभ ले पायेंगे।
3. आपश्री वर्ष में अधिकतम 15 दिवस तक उक्त सुविधा का लाभ ले पायेंगे।
4. आपश्री के साथ संस्थान के प्रॉटोकॉल अधिकारी रहेंगे।
5. आपश्री को श्रीनाथजी दर्शन, उदयपुर भ्रमण एवं संस्थान का अवलोकन कराया जायेगा।
6. आपश्री संस्थान में नैचुरोपेथी चिकित्सा का लाभ चिकित्सक परामर्श के अनुसार ले सकते हैं।
7. डॉनर के साथ रोगी/परिचारक होने पर उन्हें (रोगी/परिचारक) उचित चिकित्सा हेतु वार्ड में ही रूकना होगा।
8. इस कार्ड का उपयोग आपश्री स्वयं कर पायेंगे ।

1. आपश्री के कार्ड की वैधता अधिकतम 3 वर्ष रहेगी।
2. आपश्री वर्ष में 1 बार 2 व्यक्ति पूर्वसूचित सूचना के आधार पर संस्थान के अतिथि भवन में वातानूकूलित आवास, वाहन तथा शुद्ध शाकाहारी भोजन की सुविधा का लाभ ले पायेंगे।
3. आपश्री वर्ष में अधिकतम 4 दिवस तक उक्त सुविधा का लाभ ले पायेंगे।
4. आपश्री के साथ संस्थान के प्रॉटोकॉल अधिकारी रहेंगे।
5. आपश्री को श्रीनाथजी दर्शन, उदयपुर भ्रमण एवं संस्थान का अवलोकन कराया जायेगा।
6. आपश्री संस्थान में नैचुरोपेथी चिकित्सा का लाभ चिकित्सक परामर्श के अनुसार ले सकते हैं।
7. डॉनर के साथ रोगी/परिचारक होने पर उन्हें (रोगी/परिचारक) उचित चिकित्सा हेतु वार्ड में ही रूकना होगा।
8. इस कार्ड का उपयोग आपश्री स्वयं कर पायेंगे ।

नारायण सेवा संस्थान

नर सेवा नारायण सेवा

नारायण दिव्यांग सहायता केन्द्र

आगरा (उ.प्र.)
श्री सुरेश कुमार जी
मो. 09837371298
बी-41, बालाजी पुरम, अलबतियाँ रोड,
शाहगंज, पो.-भोगीपुरा, आगरा (उ.प्र.)

जयपुर, चौगान स्टे.
श्री मनीष कुमार खण्डेलवाल
मो. 8696002432, बी-16
गोविन्ददेव कॉलोनी, चौगान स्टेडियम
के पीछे, गणगौरी बाजार, जयपुर (राज.)

प्रयागराज
श्री कैलाश शर्मा
मो. 09001690017
बिल्डिंग नं. - 191-बी/1ई, लक्ष्मी निवास
राजरूपुर, इलाहाबाद

वाराणसी
श्री रमेश चन्द लालवानी
मो. 09415228263
सी-19, भुवनेश्वर नगर कॉलोनी, वाराणसी

राजकोट
श्री तरूण नागदा
मो. 09529920083
भगत सिंह गार्डन के सामने आकाशवाणी
चौक शिवशक्ति कॉलोनी, ब्लोक नं.
15/2 युनीवसीटी रोड, राजकोट (गुजरात)

चण्डीगढ़
श्री ओमप्रकाश गौतम, मो. 9316286419
म.नं.-3658, सेक्टर-46/सी, चण्डीगढ़

कोलकाता
श्री प्रकाश नाथ मो. 09529920097,
श्री मुकेश भटनागर, मो.07412060406
म.न.-226, ए ब्लॉक, ग्राउण्ड फ्लोर,
लेक टाऊन कोलकाता-700089

गुरुग्राम
श्री मूल शंकर मेनारिया
मो.-09529920084, 07023101162
973/3 गली न. 3 राजीव नगर ईस्ट,
राज टेलर के सामने, गुरूग्राम (हरियाणा)

पूणे
श्री सुरेन्द्रसिंह झाला, मो. 09529920093
17/153 मेन रोड, गणेश सुपर मार्केट
गोखले नगर, पूणे-16

मुम्बई
श्री ललित लौहार, मो. 9529920088
श्री मुकेश सैन, मो.- 09529920090
श्री जमना शंकर, मो.-09529920089
श्री आनन्द सिंह, मो. 07073452174
एफ 1/3, हरि निकेतन सोसायटी,
सीएचएस लि., अपोजिट बसन्त1
गैलेक्सी, गौरेगांव वेस्ट, मुम्बई

लुधियाना
श्री दौलत राम, मो. 07023101153
50/30-ए, राम गली, नौरीमल बाग
भारत नगर, लुधियाना (पंजाब)

भारत में संचालित संस्थान की शाखाएं

जालना (महाराष्ट्र)
श्रीमती विजया भूतड़ा, मो. 02482-233733

बिलासपुर (छ.ग.)
डॉ. योगेश गुप्ता, मो.-09827954009
श्रीमन्दिर के पास, रिंग रोड नं. 2,
शान्ति नगर, बिलासपुर (छ.ग.)

महोबा शाखा
श्रीमान राम आसरे-मो.-9935232257
सिन्धी कॉलोनी, गाँधीनगर-महोबा (उ.प्र.)

जुलाना मण्डी
श्रीराम निवास जिन्दल,
श्री मनोज जिन्दल मो. 9813707878, 108
अनाज मण्डी, जुलाना, जींद (हरियाणा)

धनबाद (झारखण्ड)
श्री भगवानदास गुप्ता-09234894171
07677373093 गांव-नापो खुर्द, पो.-
गांसाई बलिया, जिला-हजारीबाग (झारखण्ड)

परभणी (महाराष्ट्र)
श्रीमती मंजु दरड़ा-मो. 09422876343

पाचोरा (महाराष्ट्र)
श्री सीताराम जी-मो. 9422775375

शाहदरा शाखा
श्रीमान विशाल जी अरोड़ा-8447154011
श्रीमान रविशंकर जी अरोड़ा-9810774473
मैसर्स शालीमार ड्राइक्लीनर्स
IV/1461 गली नं. 2 शालीमार पार्क,
D.C.B. ऑफिस के पास, शाहदरा, ईस्ट दिल्ली

बालोतरा (राज.)
श्री चेतनप्रकाश गोयल/9460666142
उज्जवल भवन, बाडमेर कलेण्डर
रोड, बालोतरा

नागपुर
श्री हेमन्त मेघवाल, मो. 09529920092
पी.एन. 37, गोरले लेआउट, बस स्टेण्ड
के पास, गोपाल नगर, नागपुर (महाराष्ट्र)

नरवाना (हरियाणा)
श्री धर्मपाल गर्ग, मो.-09466442702,
श्री राजेन्द्र पाल गर्ग मो.-9728941014
165-हाऊसिंग बोर्ड कॉलोनी नरवाना, जीन्द

सुमेरपुर (राज.)
श्री गणेश मल विश्वकर्मा, मो. 09549503282
अंचल फाउण्डरी, स्टेशन रोड, सुमेरपुर, पाली

अम्बाला केन्द
श्री मुकुट बिहारी कपूर, मो. 08929930548
मकान नं.- 3791, ओल्ड सब्जी मण्डी, अम्बाला
केन्द, अम्बाला केन्द-133001 (हरियाणा)

बूंदी
श्री गिरिधर गोपाल गुप्ता, मो. 9829960811,
ए.14, 'गिरधर-धाम', न्यू मानसरोवर कॉलोनी
चित्तौड़ रोड, बून्दी (राज.)

पाली/जोधपुर
श्री कान्तिलाल मूथा, मो. 07014349307
31, गुलजार चौक, पाली मारवाड़ (राज.)

मुम्बई
श्री कमलचन्द लोढ़ा, मो. 08080083655
दुकान नं 660, आर्किडसिटी सेन्टर, द्वितीय
मंजिल, बेस्ट डिपो के पास, बेलासिस
रोड, मुम्बई सेन्ट्रल (ईस्ट) 400008

मथुरा
श्री दिलीप जी वर्मा, मो. 08899366480
09027026890, 1, द्वारिकापुरी, कंकाली, मथुरा (उ.प्र.)

सिरसा, हरियाणा
श्री सतीश जी मेहता मो. 9728300055
म.न.-705, से.-20, पार्ट-द्वितीय, सिरसा, हरि.

मुम्बई
श्री प्रेम सागर गुप्ता, मो. 9323101733
सी-5, राजविला, बी.पी.एस. 2
क्रोस रोड, वेस्ट मुलुंड, मुम्बई

मुम्बई
श्रीमती रानी दूलानी, न.-028847991
9029643708, 10-बी/बी, वाईसराय
पार्क, ठाकुर विलेज कान्दीवली, मुम्बई

मुम्बई (कान्दिवली)
श्री चिमनभाई मेहता, मो. 09930356227
56/58 जनसुख अपार्टमेन्ट, 5 फ्लोर, कस्तूरबा
रोड, मुम्बई कान्दिवली (प.) 400067

हापुड़ (उ.प्र.)
श्री मनोज कंसल मो.-09927001112,
डिलाइट टैन्ट हाऊस, कबाड़ी बाजार, हापुड़

हाथरस (उ.प्र.)
श्री दास बृजेन्द्र, मो.-09720890047
दीनकुटी सत्संग भवन, सादाबाद

फरीदाबाद
श्री नवल किशोर गुप्ता मो. 09873722657
कश्मीर स्टेशनरी स्टोर, दुकान नं. 1डी/12,
एन.आई.टी., फरीदाबाद, हरियाणा

भीलवाड़ा
श्री शिव नारायण अग्रवाल, मो. 09829769960
C/o नीलकण्ठ पेपर स्टोर, L.N.T. रोड,
भीलवाड़ा-311001 (राज.)

हमीरपुर
श्री रसील सिंह मनकोटिया, मो. 09418061161
जामलीधाम, पोस्ट-रोपा, जिला-हमीरपुर-177001

जयपुर
श्री नन्द किशोर बत्रा, मो. 09828242497
5-C, उन्नति एक्सलेव, शिवपुरी, कालवाड़ रोड,
झोटवाड़ा, जयपुर 302012 (राजस्थान)

आकोला
श्रीमान हरिश जी, मो.नं. - 9422939767
आकोट मोटर स्टेण्ड, आकोला (महाराष्ट्र)

आगरा शाखा
श्रीमान ओम प्रकाश जी अग्रवाल
मो.नं. -9897068974, 64ए ओल्ड
विजयनगर कॉलोनी, आगरा (उ.प्र.)

काठमाण्डू, नेपाल
श्री संदीप माखरिया, 09779851021098

हजारीबाग
श्री डूंगरमल जैन, मो.-09113733141
C/o पारस फूड्स, अखण्ड ज्योति ज्ञान केन्द्र,
मेन रोड सदर थाना गली,
हजारीबाग (झारखण्ड)

खरसिया
श्री बजरंग बंसल, मो.-09329817446
शान्ति ड्रेसेज, नियर चन्दन तालाब
शनि मन्दिर के पास, खरसिया (छ.ग.)

नांदेड़ (सेवा प्रेरक)
श्री विनोद लिंबा राठोड, 07719966739
जय भवानी पेट्रोलियम, मु. पो. सारखानी,
किनवट, जिला - नांदेड़, महाराष्ट्र

जम्मू
श्री जगदीश राज गुप्ता,
मो.-09419200395
गुरू आशीर्वाद कुटीर, 52-सी
अपर शिव शक्ति नगर जम्मु-180001

दीपका, कोरबा (छ.ग.)
श्री सूरजमल अग्रवाल, मो. 09425536801

अलवर
श्री आर.एस. वर्मा,
मो.-09024749075, के.वी. पब्लिक स्कूल,
35 लादिया, बाग अलवर (राज.)

कैथल
श्री सतपाल मंगला,
मो. 09812003662-3
68-ए, नई अनाज मंडी, कैथल

हमीरपुर
श्री ज्ञानचन्द शर्मा,
मो. 09418419030
गाँव व पोस्ट - बिघरी, त. बदसर
जिला हमीरपुर - 176040 (हिमाचलप्रदेश)

भोपाल
श्री विष्णु शरण जी सक्सेना,
मो. 09425050136
A-3/302, विष्णु हाईटेक सिटी, अहमदपुर
रेल्वे क्रोसिंग के सामने, बावड़िया कलाँ,
होशंगाबाद रोड जिला - भोपाल (म.प्र.)

नारायण निःशुल्क फिजियोथेरेपी सेन्टर

रायपुर
श्री भरत पालीवाल, मो. 7869916950
मीरा जी राव, म.नं.-29/500 टीवी
टावर रोड, गली नं.-2, फेस-2
श्रीरामनगर, पो.-शंकरनगर, रायपुर, छ.ग.

अम्बाला
श्री शिव कुमार, मो. 07023101160
सविता शर्मा, 669, हाऊसिंग बोर्ड
कोलोनी अरबन स्टेट के पास,
सेक्टर-7 अम्बाला (हरियाणा)

देहरादून
श्री मुकेश जोशी, मधुर विहार, 7023101175
2 इंद्रा गांधी मार्ग, निरंजनपूर मण्डी
तोहड़ा ढाबे के पास, देहरादून-248001

रोहिणी
श्री वेद प्रकाश शर्मा मो.-08588835719
श्री प्रवंजन साहु मो.-08588835718
सी-7/232, सेक्टर-8, स्वीमिंग पूल
के पास, रोहिणी, दिल्ली-85

लोनी
दानदाता : डॉ. जे.पी. शर्मा, 9818572693
साधक : धर्मेश गर्ग, 7023101156
श्रीमती कृष्णा मेमोरियल निःशुल्क फिजियोथेरेपी
सेन्टर, 72 शिव विहार, लोनी बन्थला,
चिरोड़ी रोड (मोक्षधाम मन्दिर) के पास
लोनी, गाजियाबाद (यू.पी.)

मथुरा
श्री नवनीत सिंह पंवार, मो.-7023101163
77-डी, कृष्णा नगर, मथुरा (उ. प्र.)

मोदीनगर, यू.पी.
एस.आर.एम. कॉलेज के सामने,
मॉर्डन एकेडमी स्कूल के पास,
मोदीनगर

बड़ौदा
श्री जितेश व्यास
मो. 09529920081
म.नं.-बी-13 बी, एस.टी. सोसायटी,
टीबी हॉस्पीटल के सामने,
गोत्री रोड, बड़ौदा - 390021

हाथरस
श्री जे.पी. अग्रवाल, मो. 09453045748
एलआईसी बिल्डींग के नीचे, अलीगढ़
रोड, हाथरस (यू.पी.)

शाहदरा, दिल्ली
बी-85, ज्योति कॉलोनी,
दुर्गापुरी चौक, शाहदरा, दिल्ली-32

कैथल
डॉ. विवेक गर्ग
मो. 9996990807, गर्ग
मनोरोग एवं दांतो का हस्पताल के अन्दर
पद्मा मॉल के सामने
करनाल रोड, कैथल

गाजियाबाद
श्री भंवर सिंह राठौड़
मो. 08588835716
184, सेठ गोपीमल धर्मशाला केलावालान,
दिल्ली गेट गाजियाबाद (उ.प्र.)

नारायण सेवा संस्थान
नर सेवा नारायण सेवा

नारायण दिव्यांग सहायता केन्द्र, नारायण निःशुल्क फिजियोथेरेपी सेन्टर, नारायण कृत्रिम अंग निर्माण एवं केलिपर सृजन वर्कशॉप

अहमदाबाद
श्री कैलाश चौधरी, मो. 09529920080
सी-5, कौशल अपार्टमेन्ट,
शाहीबाग अण्डर ब्रीज के नीचे,
शाहीबाग, अहमदाबाद (गुजरात)

3/28, गुजरात हाऊसिंग सोसायटी नियर
बापू नगर पुलिस स्टेशन अहमदाबाद (गुजरात)

हैदराबाद
श्री महेन्द्रसिंह रावत, 09573938038
4-7-123, लीलावती भवन
संतोषी माता मंदिर के पास,
इसामिया, बाजार, हैदराबाद

अलीगढ़
श्री योगेश निगम, मो. 7023101169
एम.आई.जी. -48, विकास नगर
आगरा रोड़, अलीगढ़ (यू.पी)

बैंगलोर
श्री खुबीलाल मेनारिया, मो.: 09341200200
म.नं.-507/4, (129-2) न्यू डायगोनल रोड़,
भीमा ज्वेलर्स के पीछे 3-ब्लॉक, जयानगर, बैंगलूरू

इन्दौर
श्री जितेन्द्र पटेल, 09529920087
जी-1, विनीत श्री सम्पदा, 14 कल्पना लोक
कॉलोनी, चन्द्रलोक रिक्शा स्टेण्ड गली, आनन्द
बाजार के पास, खजराना मैन रोड़, इन्दौर

फतेहपुरी, दिल्ली
श्री जतनसिंह भाटी, मो.- 8588835711
09999175555, कटरा बरियान,
अम्बर होटल के पास, फतेहपुरी, दिल्ली-6

मेरठ
श्री मधुसुदन, मो. 09057547527
123, पुरानी प्रेमपूरी मेरठ (उ.प्र.)

सूरत
श्री अचल सिंह, मो. 09529920082,
27, सम्राट टाऊन शीप, सम्राट स्कूल के
पास, परवत पाटीया

2/865 हीरा मोदी गली सगरामपुरा,
सब जेल के सामने, रिंग रोड, सूरत

कोरबा
श्री देवनाथ साहू, मो. 09229429407
गांव- बेला कछार, मु.पो. बालको
नगर, जिला-कोरबा (छ.ग.)

पटना
श्री संदीप भटनागर, मो. 07023101172
101, गणेश जानकी अपार्टमेंट, रोड़ नं. 2
नेहरू नगर, गांधीपथ, पाटली पुत्र, पटना (बिहार)

जयपुर
श्री विक्रम सिंह चौहान
मो. 9928027946, बद्रीनारायण
वैद फिजियोथेरेपी हॉस्पीटल एण्ड
रिचर्स सेन्टर बी-50-51 सनराईज सिटी,
मोक्ष मार्ग निवारू झोटवाड़ा, जयपुर

आगरा
श्री ज्ञान गुर्जर, मो. 7023101174
127, नोर्थ विजय नगर कोलोनी
राधा कृष्ण मन्दिर के पास, पंजाब
नेशनल बैंक के पीछे, आगरा (उ.प्र.)

लखनऊ
श्री बद्रीलाल शर्मा, मो. 09923674371
551/च/157 नियर केला गोदाम,
डॉ. निगम के पास, जय प्रकाश नगर
आलम बाग, लखनऊ (उ.प्र.)

मानव जी के प्रेरणा पुंज

स्व. आचार्य श्री राम शर्मा एवं
भगवती देवी जी

श्री मानव जी के पूज्य पिताश्री
स्व. श्री मदन लाल जी एवं
मातुश्री सोहिनी देवी जी

संस्थान के परम
संरक्षक
श्री रमेश भाई चावड़ा
यूके

संस्थान के सम्बल

स्व. श्री राजमल जी
'एस.' जैन
चेयरमैन, भैरव नेत्र यज्ञ
समिति, बिसलपुर, पाली (राज.)

स्व. डॉ. आर.के. अग्रवाल
विख्यात
कैंसर रोग विषेशज्ञ

स्व. श्री पी.जी. जैन
गौरेगांव/हरियामाली
(सोजत रोड़)

स्व.श्री चैनराज जी लोढा
मुम्बई/घाणेराव
(पाली)

नारायण चिल्ड्रन एकेडमी

आपश्री से विनम्र अनुरोध है कि ग्रामीण क्षेत्रों के निर्धन परिवारों के बच्चों को शिक्षा हेतु अपना योगदान प्रदान करें ताकि आपश्री के आशीर्वाद एवं योगदान से ये बच्चे आत्म निर्भर होकर देश के विकास में सम्मान के साथ अपना योगदान सुनिश्चित कर सकें।

1. एक बच्चे की शिक्षा हेतु दानराशि (कक्षा के जी से बारहवीं तक 4.5 लाख रूपये)
2. एक कक्षा (20 बच्चों) की शिक्षा हेतु दान राशि 1 वर्ष के लिए 6 लाख रूपये
3. सम्पूर्ण बैच (20 बच्चों) की (केजी से बारहवीं) तक की शिक्षा हेतु दान राशि 90 लाख रूपये
4. एक बच्चे का शिक्षा, भोजन, स्टेशनरी आदि का सम्पूर्ण मासिक खर्च 3000 रूपये
5. एक बच्चे का सम्पूर्ण खर्च 36 हजार रूपये

आपकी अपनी संस्था

दीन-दुःखियों की सेवा में 24 घण्टे सेवारत संस्थान/ट्रस्ट जिसमें निःशुल्क सेवा की जाती है। इस सेवाकार्य में आपश्री का एक सहयोग किसी दीन-दुःखी, दिव्यांग के चेहरे पर अपार खुशियाँ ला सकता है। आज ही जुड़ें इस सेवा कार्य में-मान्यवर।

नारायण सेवा संस्थान
नर सेवा नारायण सेवा

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें- अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	BranchAddress	RTGS/NEFTCode	Account
ALLAHABAD BANK	-3,BapuBazar	ALLA0210281	50025064419
AXIS BANK	-UitCircle	UTIB0000097	097010100177030
BANK OF INDIA	-H.M.Sector-5	BKID0006615	661510100003422
BANK OF BARODA	-H.M,Udaipur	BARBOHIRANM	30250100000721
BANK OF MAHARASHTRA	Arihant Complex Plot No. 16, Thoran Banwre City Station Marg,udaipur	MAHB0000831	60195864584
CANARA BANK	Madhuban	CNRB0000169	0169101057571
CENTRAL BANK OF INDIA	UDAIPUR	CBIN0283505	00000001779800301
HDFC BANK	358-Post Office Road, Chetak Circle	HDFC0000119	50100075975997
ICICI Bank	-Madhuban	ICIC0000045	004501000829
IDBI Bank	-16SaheliMarg	IBKL0000050	050104000157292
KOTAK MAHINDRA BANK	-8-C, Madhuban	KKBK0000272	0311301094
PUNJAB NATIONAL BANK	-KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
UNION BANK OF INDIA	-UdaipurMain	UBIN0531014	310102050000148
STATE BANK OF INDIA	-H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
VIJAYA BANK	Gupteshwar Road Titardi	VIJB0007034	703401011000095
YESBANK	-GoverdhanPlaza	YESB0000049	004994600000102

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार कर में छूट के योग्य है।

नारायण सेवा संस्थान

'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

विभिन्न चैनलों पर संस्थान के सेवा कार्य

भारत में संचालित

- **आस्था** 9.00 am- 9.20 am, 7.40 pm- 7.55 pm
- **संस्कार** 7.50 pm- 8.10 pm
- **आस्था** 7.40 am- 8.00 am
- **जी.टी.वी.** 5.00 am- 6.00 am
- **पारस टी.वी.** 4.20 pm- 4.38 pm
- **अरिहन्त** 7.30 pm- 7.50 pm
- **(सत्संग)** 7.10 pm- 7.30 pm

विदेश में संचालित (हिन्दी)

- **संस्कार** 7.40 pm- 8.00 pm
- **आस्था (यू.के/यू.एस.ए.)** 8.30 am- 8.45 am
- **जी.टी.वी.** 8.30 am- 8.45 am
- **एम.ए.टी.वी. (यू.के)** 8.30 am- 8.45 am

विदेश में संचालित (अंग्रेजी)

- **JUS PUNJABI** 4.30 pm-4.40 pm (Sat-Sun only)
- **APAC** 8.30 am -9.00 am
- **SOUTH AFRICA** 8.00 am -8.30 am (CAT)
- **UK** 8.30 am - 9.00 am
- **USA** 7.30 am - 8.00 am (ET)
- **MIDDLE EAST** 8.30 am -9.00 am (UAE)

सेवा-पाती (मासिक पत्रिका) मुद्रण तारीख 1 मई, 2019, आर.एन.आई. नं. DELHIN/2017/73538, पोस्टल रजिस्ट्रेशन संख्या DL (DG-II)/8087/2017-2019 (प्रेषण तिथि हर माह की दिनांक 2 से 8 दिल्ली आर.एम.एस. दिल्ली डाकघर) स्वत्वाधिकार नारायण सेवा संस्थान, प्रकाशक जतन सिंह मो. 09871320593 द्वारा 6473, कटरा बरियान, फतेहपुरी, दिल्ली-110006 से प्रकाशित तथा एम.पी. प्रिंटर्स नोयडा से मुद्रित। मुद्रित संख्या 3,50,000 (मूल्य) 5 रूपये

आइए बनें पक्षियों का सहारा

प्रचंड गर्मी का मौसम नन्हें पंछी आपके आंगन आएंगे उनके लिए दाना व पानी सकोरे में रखें ताकि राहत मिल सके और हमारी पीढ़ी को अच्छे संस्कार मिल सकें - 'सेवक' प्रशान्त भैया

सेवा कार्य से जूड़ने के लिए सम्पर्क करें : 0294-6622222, 09649499999